सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग – फ तों भ

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

फकीर : नारद कहे भगतो मेरी किताब दी निक्की जेही लकीरी, निक्कयो निक्कयो निक्कयो तुहानूं दिआं जणाईआ। सतिगुर दा हुक्म मन्नणा सभ तों वड्डी फ़कीरी, इके फ़िकरे विच्च दो जहान दा लेखा दए मुकाईआ। शरअ दी गलों कट देवे ज़ंजीरी, जगत संगल दए तुड़ाईआ। घर दर्शन देवे बेनज़ीरी, नज़रां तों ओहले आपणा पर्दा दए उठाईआ। प्रेमीओ जदों मिलदा भगतां नूं मिलदा तकदीरी, तकदीर पिछली दए बदलाईआ। क्यों उहदे हत्थ साची तदबीरी, बिना भगतीउँ पार कराईआ। क्यों उहदी मंज़ल इक्क अखीरी, बिना अक्खरां तों दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक्क सुहाईआ। (१४ माघ श सं ११)

गोदावरी कहे मैं दस्सां अन्त अख़ीरी, सर्ब दिआं समझाईआ। जिस दे कोल मीरी पीरी, शाह हकीरी वेख वखाईआ। उह रहण ना देवे कोई दिलगीरी, उदासी कूड़ी दए मिटाईआ। बेशक अगे गली औण वाली भीड़ी, मार्ग औखा नज़री आईआ। फेर वी भगतो तुहाड्ढी बणी रहणी पीड़ी, पिर तुहाड्ढे हत्थ रखाईआ। हुण कोई बणना नहीं रूप कीड़ी, शेरां दा शेर नज़री आईआ। थोड़ी जही दन्दां हेठ जीभ दब के वट लउ दबीड़ी, दर्द सभ दए गवाईआ। "सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान", नालों चंगी नहीं फ़कीरी, इके फ़िकरे अंदर फ़िकर सारे दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। (४ अस्सू श सं १)

गुर अवतार पैगम्बर कहण असां कहणा अन्त अखीरी, आखर दईए जणाईआ। जन भगतो सच दवार इक्को रूप ग़रीबी अमीरी, जिथ्थे अमरापद मिले वडयाईआ। तुहाड्ढी सभ तों उत्तम फ़कीरी, जो फिकरा सोहँ ढोला रहे गाईआ। इक्को गृह पातशाह वज़ीरी, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। झगढ़ा रहे ना शाह हकीरी, हकीकत दा पड़दा दित्ता उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच्च समाईआ। (१ हाढ़ श सं ६)

फ़कीरां फ़िकरा हक़ ना पढ़या, सुणी कलाम ना धुरदरगाहीआ। हुजरे अंदर हज्ज ना करया, मिल्या मेल ना बेपरवाहीआ। सच महराबे मूल ना खड़या, सोहणा रूप वटाईआ। जीवत रूप कोई ना मरया, काया गोर ना सोभा पाईआ। सच प्याला जाम किसे ना भरया, ख़ाली दिसे तत्त सुराहीआ। दर दरवेश ना बणया दरया, सच अलख ना कोई जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा इक्क अखवाईआ।

फ़कीरां फ़िकरा ना जाता हक़, हकीकत बैठी मुख भवाईआ। जगत खुदाई रहे तक्क, तकवा देवे ना बेपरवाहीआ। लभ्भ लभ्भ सारे गए थक्क, अंदर बाहर खोज खुजाईआ। कौडी पल्ले ना किसे कख, कीमत सके ना कोई पवाईआ। सजदा सीस ना झुकया नक्क, लकीर तकदीर ना कोई मिटाईआ। जगत जीवण दिसे भट्ठ, अगनी भठिआला इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि रघुराईआ।

फ़कीर फ़िकर ना जाणे, पर्दा उहला ना कोई उठाईआ। रंग महबूब कोई ना माणे, सुंञीं सेज देण दुहाईआ। रातीं सुत्तयां रैण विहाणे, बांहों फड़ गले ना कोई लगाईआ। बाली बुध बणे बाल अञाणे, मनमत देवे जगत गवाहीआ। कूड़ी क्रिया बैठी सराणे, सोहणा वेस शिंगार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। फ़कीरां मिली ना सच फ़कीरी, फ़ज़ल फ़ाज़ल रैहम ना कोई कमाईआ। तुटी तन ना शरअ ज़ंजीरी, शरीअत पन्ध ना कोई मुकाईआ। तसबी मिली ना बेनज़ीरी, मन का मणका दए भवाईआ । दूई द्वैत ना मिटी पीड़ी, दर्दी दर्द ना कोई वंडाईआ। चोटी चढ़े ना कोई अख़ीरी, गृह वेखे चाईं चाईंआ। लेखा चुके ना शाह हकीरी, हकीर हकीरां विच्च बैठा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सोहला रिहा सुणाईआ।

फ़कीरां फ़िकरां अंदर आया फ़ाका, धीरज धीर ना कोई रखाइंदा । किसे नज़र ना आया साचा आका, अकल विच्चों असल शकल ना कोई समझाइंदा। बन्द किवाड़ ना खुल्ला ताका, पर्दा दूई ना कोई चुकाइंदा। आबेहयात ना मिल्या बाटा, अमृत रस ना कोई चखाइंदा। सेज सुहञ्जणी ना सुत्ता खाटा, प्रेम गलवकड़ी प्रीतम आपणी ना कोई वखाइंदा। डूंघा दिसे इक्को खाता, ख़तरा जिस विच्चों नज़री आइंदा। जिथ्थे लेखा मंगे बाका, बाकी नवीस आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। फ़कीरां चुक्कयां ना फ़िकर मौत, सहिम वहिम ना कोई मिटाईआ। जगत पीहड़ी जांदी दिसे औंत, मुरीद मुशर्द गोद ना कोई उठाईआ। अंदर वड़ के सारे रहे सोच, समझ सके कोई ना राईआ। परवरदगार मिल्या ना धुर दा ख़ौंत, ख़ावंद बीवी ना होई कुड़माईआ। ओथे किसे ना दिसे कोई पहुंच, मिलावे मेल ना सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़कीरां फ़तिहा रिहा पढ़ाईआ।

फ़कीरां उत्ते इक्को फ़िकरे लाया फ़तवा, हुक्म सादर इक्क कराईआ। किसे पीर दा चढ़े ना कोई हलवा, नयाज़ रूप ना कोई वटाईआ। कबाब मिले ना किसे तलवां, भुंन सीख ना कोई चढ़ाईआ। भटके मन ना वासना मनुआ, मन का मणका दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप मुकाईआ। फ़कीरां करे दारख़बर, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। सभ दे हत्थों कासा टुटा प्याला सबर, सबूरी

संग ना कोई निभाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जो इस्लामी बणाया टब्बर, शरअ नाल जोड़ जुड़ाईआ। तिन्नां वेखणहारा शेर बब्बर, शहनशाह इक्को फेरा पाईआ। अन्त वेला कोई ना सके संभल, कदम कदम सके ना कोई टिकाईआ। पीर पैगम्बर कहण होया ग़ज़ब, ग़रज़ पूरी ना कोई वखाईआ। फ़कीर हकीर होवण तअज्जब, हैरानी सभ दे सिर ते छाईआ। जिस लेखा चुकौणा दीन मज़हब, ला मज़हब फेरा पाईआ। उम्मत उम्मती सारे करो अदब, आदाब इक्को सीस झुकाईआ। सभ दा हल्ल करे मतलब, मुतालया कर के वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

सच फ़कीर बणाए गुरमुख, जिस फ़िकरा हक़ पढ़ाइंदा। प्रेम प्रीती कर बणाए सुत, पिता पूत गोद उठाइंदा। कलिजुग अन्तम लए पुच्छ, पतिपरमेश्वर फेरा पाइंदा। जन भगतां झोली पाए सभ कुछ, आपणा ख़ाली हत्थ रखवाइंदा। एथे ओथे दो जहान पैंडा जाए मुक्क, अद्धविचकार ना कोई अटकाइंदा। सन्त सुहेला बूटा कदे ना जाए सक्क, पत्त टैहणी आप महकाइंदा। शब्दी धारों आपे उठ, जोती जाता वेख वखाइंदा। प्रेम प्यार सच प्रीती अंदर लुक, आत्म सेजा सुहञ्जणी डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फ़कीर इक्क वखाइंदा।

सच फ़कीर जन भगत, जन्म जन्म दा भेव चुकाईआ। लेखे लाए बूंद रकत, पंज तत्त काया माटी दए वडयाईआ। आत्म परमात्म पाए साची शक्त, शख़सीयत आपणे नाल रखाईआ। आपे जाणे वेला वक्त, थित वार सके ना कोई समझाईआ। गुरमुखां उत्ते कर के तरस, रहमत आपणी रिहा वरताईआ। जुग जन्म जो रहे भटक, दे दरस भटकना दए गवाईआ। अद्धविचकार कोई ना जाए लटक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। गुरमुख फ़कीर कोटां विच्चों फ़कत, जिस फ़िकरा पढ़या सोहँ ढोला गाईआ। तिस आत्म विछड़ी फेर मिलावे परत, प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। नेत्र दीदार अक्ख अक्खीआं कर के दरस, दर्शन आपणा इक्क दृढ़ाईआ। एहो खेल प्रभू असचरज, अचरज लीला रिहा वखाईआ। छुरी शरअ फेर करद, ज़बह ज़ालम रिहा वखाईआ। दुखीआं दीनां वंडे दर्द, मेहरवान सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन साचे मेले सहज सुभाईआ। (६ जेठ २०२१ बि)

फरिश्ता : देह शब्द जोत ना हुंदा रिश्ता, प्रभ दा सज्जण नज़र कोई ना आईआ। ना कोई हुक्म देंदा जबराईल इशराईल मेकाईल असराफील फरिश्ता, फरिसत हत्थ ना कोई फड़ाईआ। एह भेव समझण वाला आहिस्ता आहिस्ता आहिस्ता, जिस वेले चोटी मंज़ल चढ़ के प्रभ दा दर्शन पाईआ। फेर पक्का हो जाए निसचा, जगत वासना सके ना कोई डुलाईआ। जिध्धर वेखे ओधर एका रूप दिसदा, घट घट रमया बेपरवाहीआ। (३ सावण शहनशाही सम्मत २)

कलिजुग सालस आप प्रभ, हरि रंग रंगीला। कलिजुग सालस आप प्रभ, करे सच नयाउँ, बैठ साचे थाउँ, कर कर साचा हीला। चारे कुण्ट प्रभ अबिनाशी जोती अगन लाए एका

तीला। प्रगट हो घनकपुर वासी, तन छुहाया बाणा, चिट्टा सूहा लाल काला नीला । गुरमुखां मानस जन्म करे रहरासी, कर कर साचा हीला। बेमुखां आत्म लाहे उदासी, डंक वजाए असराफीला। अन्तम गूड़ी नींद सवाए, मगर लगाए अज़राईला। सच सुनेहुड़ा आप सुणाए, मातलोक विच आए बण फरिश्ता ज़बराईला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द इक्क वरताया, गुरसिखां आत्म आप धराया, देवे सच्ची रोज़ी राज़क रहीमा, रहीम करीमा गुणी गनीमा, नाल रखाया मेकाईला। (६ जेठ २०११ बि)

फुलवाड़ी : प्रभ दर आए जीव सवाली। अंस बिनां जो रह गए खाली। बिन प्रभ कोई ना बणदा वाली। जगत तृसना आत्म जाली। बच्चे फुलवाड़ी, मात पित बण जावे माली। महाराज शेर सिँघ जो जन रसना गाए, कलिजुग गोद ना जाए खाली। (५ जेठ २००८ बि)

एका माया सृष्ट प्रभ पाई। माया रूपी सभ खेल रचाई। सृष्ट सबाई प्रभ माया रूप उपाई। जीव जंत प्रभ फुलवाड़ी विच्च लगाई। जुगो जुग उपजावे मिटावे, अचरज रचना प्रभ रचाई। (१ माघ २००८ बि)

किरपा धारी पैज सवारी। प्रभ बनवारी गिरवर गिरधारी। कृष्न मुरारी कँवल नैण मुकट बैण साचा छत्तर सीस झुलारी। मुकन्द मनोहर लखमी नरायण अचुत परब्रह्म परमेश्वर गुरसिख लगाए साची फुलवाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप बणाई मौत लाड़ी। (५ कत्तक २००६ बि)

पारब्रह्म कल खेल नयारी। जन भगत साची फुलवाड़ी। आप बणाए लगाए साची वाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका शब्द जपाए जोत जगाए बहत्तर नाड़ी। (१७ चेत २०१० बि)

सच निशाना जाए झुल्ल। प्रभ साचे दा साचा दर जाए खुल्ल। कलिजुग दीवा होए गुल। सतिजुग फुलवाड़ी गुरसिख उपजाए फुल्ल । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी करे वाड़ी, गुरसिख ना जाणा डुल। (१४ मध्घर २०१० बि)

नारद कहे मैं वेखां उह चिठ्ठीआं, जिस दा अक्खर ना कोई समझाईआ । जिस विच्च अगम्मी लिखतां लिखीआं, जगत कातबां समझ कोई ना आईआ। उस विच्च इक्क साहिब दी शरअ ते इक्क साहिब दीआं मितीआं, जिस नूं मित्र प्यारा गोबिन्द किहा माहीआ। उह किसे दवारे ना विकीआं, कीमत जगत ना कोई रखाईआ। उह ना वड्डीआं ना निक्कीआं, सभे इके रंग समाईआ। उह कलिजुग नूं वेख मैनूं मारन खिच्चीआं, हलूणे दे के रहीआं जगाईआ। वे नारदा क्यों नहीं साडीआं गल्लां दस्सदा विचीआं, विचला भेव खुलाईआ। असीं ना ऊँच ना नीचीआं, वड्डी छोटी बणत ना कोई बणाईआ। सानूं एसे कारन चढ़दीआं कचीचीआं, वड्डे छोटे लड़ लड़ मरन ते नाता रक्खण भैण भाईआ। प्रभू दे प्यार दीआं फुलवाड़ीआं ते बगीचीआं, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगत नज़री आईआ। एहो इशारा देवे मुहम्मद विच्च हदीसीआं, कलमयां विच्च गाईआ। फेर साडा लेख वेख जगत जहान दीआं चक्कीआं जाणीआं पीसीआं, चकनाचूर होवे लोकाईआ। फेर पिओ पुत्तरां मावां धीआं नारां मरदां इक्क दूजे नूं वटणीआं

कसीसीआं, किस्मत दे मारयो क्यों भुल्लया बेपरवाहीआ। जिस साहिब दे कोल जगत दीआं जगदीसीआं, जगदीशर इक्क अखवाईआ। उस दीआं किआ रीसीआं, जो रसते जांदिआं नूं दए भुलाईआ। जे उह रहमत करे ते रहमत दीआं बख्शीशीआं, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। नारदा वेख साडा लेख उत्ते गीटीआं, सपतस रिखीआं नूं हलूणा दे लगाईआ। सारयां दे कोलों लेखे मुक्क जाणे गुर अवतार पैगम्बरां लोकमात सचखण्ड दीआं टिकटां वेखणीआं नहीं जगत दीआं टीटीआं, सारे लेखा प्रभ दे हत्थ फड़ाईआ । पिछलिआं जुगाँ दीआं कहाणीआं पिच्छेबीतीआं, पिछला लेखा रहे ना राईआ। अग्गे इक्को इक्क दीआं चलणीआं रीतीआं, रीतीवान बेपरवाहीआ। माण मिलणा हस्त कीटां चिउटीआं, गजां माण तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। (३ सावण श सं ८)

बदमाश : कलिजुग रो दस्से हाल, ... तेरे अग्गे मेरी अरदास, अरदासा इक्को वार कराइंदा। तूं साहिब पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता नाउँ धराइंदा। जुग जुग तेरा खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा गीत अलाइंदा। मैं तेरा छोटा पुत्त तेरे प्यार विच्च होया बदमाश, बदमुआशी घर घर आप सिखाइंदा । ख़ाली कोई रहण ना दित्ती लाश, पंज तत्त अंदर डेरा लाइंदा। माया ममता गृह गृह पावे रास, कूड़ी क्रिया नाच नचाइंदा । तेरी निक्की जिही मुहम्मद शाख़, महमान लोकमात अखवाइंदा। तेरा गोबिन्द दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। मैं तेरा पुत्तर ख़ास, ख़ालक तेरे रंग रंगाइंदा। मेरे वल वेख मार झात, झाकी तेरी आप जणाइंदा। चारों कुण्ट पई अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोई चढ़ाइंदा। कलिजुग जीव नार होए कमज़ात, हरि जू कन्त ना कोई हंडाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गौंदे गाथ, अन्तर आत्म मेल ना कोई मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आइंदा । (१६ फग्गण २०१६ बि)

मन मनुआ घर विच्च वड़या बदमाश, सांतक सति नज़र कोई ना आईआ। (२१ भादरों २०२१ बि)

गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण आ पढ़ लै आपणा अक्खर, आखर दित्ता जणाईआ। कलिजुग अन्तम किसे नूं सुटया रोड़ी सक्खर, सखीआं वाला काहन आपणी उंगलीआं नाल रखाईआ। किसे नूं करके आपणे नालों वक्खर, वक्खरा साढ़े तिन्न हत्थ मकान दित्ता बणाईआ। किसे नूं फौज दे के लशकर, लहन्दी दिशा ख़ुशी जणाईआ। किसे दा लहण जाणे तशकर, तालब बेपरवाहीआ। किसे नूं पढ़न घलाया मकतब, अक्खरां नाल समझाईआ। किसे नूं खड़ग खण्डा समझा के करतब, कतलगाह वडयाईआ। किसे दे हत्थ फड़ाके धनश, चिल्ला कमान चढ़ाईआ। किसे दे कोलों कुहा के आपणा बंस, बंसरी नाम सुणाईआ। किसे नूं मुख लगाके सहँस, सहँसर जिह्वा राग अलाईआ। किसे नूं बणा के आपणी अंस, गोबिन्द नाउँ प्रगटाईआ। किसे नूं वाड़ के विच्च जन्नत, बहश्तां विच्च भवाईआ । किसे नूं समझा के धुर दा कन्त, नार इक्क वखाईआ। किसे नूं ला के आपणे अंगत, गोदी लिआ टिकाईआ।

किसे नूं वड्डिआई दे विच्च जीव जंत, जनक रूप समाईआ। किसे नूं समझाया वासी पुरी घनक, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। सभ दे कोलों रक्खके आपणा अन्त, आपणे विच्च छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह वड्डी वडयाईआ।

किसे नूं दस्सया घनकपुर वासी, साहिब इक्क जणाईआ। किसे नूं दस्सया जोत परकासी, नूरो नूर खुदाईआ। किसे नूं दस्सया हर घट वासी, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। सभ तों वक्खरा आपणी करे अगम्मी बदमाशी, जिस दी समझ कोई ना पाईआ। जुग चौकड़ी खेल कीआ बहु भांती, भाणे विच्च लुकाईआ। किसे नूं मात पिता किसे नूं भैण भईआ किसे नूं साक सज्जण बणौंदा रिहा चाची, चैहचहा करके आपणी खेल खिलाईआ। किसे नूं फुफी किसे नूं मासी, किसे नूं मंज़ल किसे नूं घाटी, किसे नूं दिवस किसे नूं राती, किसे नूं गल्लीं किसे नूं बाती, सभ नूं भरमां विच्च भुआईआ। किसे नूं सेजा किसे नूं घाटी, किसे नूं मन्दर किसे नूं हाटी, किसे नूं तीर्थ किसे नूं ताटी, किसे नूं मंज़ल किसे नूं वाटी, किसे नूं पूजा किसे नूं गाथी, किसे नूं कमलापाती करके गिआ समझाईआ। किसे नूं ग्रंथ किसे नूं साखी, किसे नूं कथा किसे नूं भाखी, किसे दी सोपणा किसे दी राखी, किसे दा पड़दा किसे दी ताकी, ताक़तवर हो के रिहा खुल्ह़ाईआ। किसे नूं बन्दा किसे नूं खाकी, किसे नूं गंदा किसे नूं आबी, किसे नूं चन्दा किसे महताबी, किसे नूं मसती किसे नूं शराबी, किसे नूं हसती किसे नूं आदाबी, सजदा सर्ब कराईआ। किसे नूं सीस किसे जगदीस, किसे नूं कलमा किसे हदीस, किसे नूं राग किसे नूं गीत, किसे नूं हार किसे नूं जीत, किसे नूं मन्दर किसे मसीत, आप सभ तों वखरा बहके खेल वखाईआ। किसे नूं जोड़ा किसे नूं घोड़ा, किसे नूं कलगी किसे नूं तोड़ा, किसे नूं जोबन किसे नूं बांका शोहरा शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। किसे नूं नाम किसे नूं जाम, किसे नूं राम किसे पैग़ाम, किसे नूं सजदा किसे सलाम, किसे नूं मन्दर किसे मकाम, किसे नूं अंदर किसे निशान, निशाना आपणा बैठा छुपाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करके हैरान, हैरत विच्च सर्ब जणाईआ। उठो वेखो आ के खेल महान, हरि करता रिहा कराईआ। नाले खोल्ह़ो बस्ते तमाम, तरतीब वार समझाईआ। साचा दस्सो केहड़ा राम, काहन कौण वडयाईआ। साचा दस्सो कवण पैगम्बर देवे पैग़ाम, कवण करे शनवाईआ। साचा दस्सो कवण सतिनाम, सति सति रिहा समाईआ। सारे कहण प्रभ तेरे बिना कूड़ निशान, अक्खरां वाला नाम सारे आए गाईआ। जां तेरे दर ते तक्कया असां सुणयां उह कलाम, जिसदी अक्खर सिफ्त ना कोई समझाईआ। असीं वेख के होए हैरान, हरि जू एह की बणत बणाईआ। तेरे चरनां कोल बैठे तक्के तेरे भगत बाल अंञान, अंञाणे अंजन इक्को नेत्र पाईआ। जिन्ह़ां नूं लक्ख चुरासी विच्चों दिती आपणी आप पहचान, बेपहचान भेव खुल्ह़ाईआ। रल मिल तेरा ढोला गौंदे गान, गीत गोबिन्द अलाईआ। इन्ह़ां दा लेखा चुक्कया पवण मसाण, मड़ी गोर पन्ध मुकाईआ। अन्तम सिधे तेरे दर ते आण, राह विच्च ना कोई अटकाईआ। २०२१ बिक्रमी पिछों गुर अवतार पीर पैगम्बर इन्ह़ां दा बबाण जाण उठाण, सेवक हो के सेव कमाईआ। क्यों तूं इन्ह़ां नूं आप दित्ता फ़रमान, फुरना पिछला रहण ना पाईआ। इक्को दस्सके इष्ट ईमान, धर्म दृड़ दित्ता दृढ़ाईआ। कागज़ां वाली भुल्ल गए कलाम, हुक्मे विच्च समाईआ। जगत सृष्टी विच्च

हो के बदनाम, तेरे बन्दीखाने विच्च आपणा आप बन्द कराईआ । एहो जिहा सोहणा सुहञ्जणा वेख तेरा निज़ाम, सारे खुशी मनाईआ। कर किरपा जिन्हां दे कोट जन्म दे बख्श दित्ते जराइम, दोशी रहण कोई ना पाईआ। प्रभू बण के आप सच्चा किरसाण, घर घर काया मन्दर अंदर आपणा हल दित्ता चलाईआ। अमृत सिंच साढ़े तिन्न हत्थ मकान, गुंचा फुल दित्ता खिलाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों एन्हां दी महक सभ ने लई पहचान, गुर अवतार पीर पैगम्बर भुल्ल कोई ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सदा सदा सद सहज सुखदाईआ। (१ कत्तक २०२१ बि)

फुल्ल कहण एह बरखा अमृत धार, जन भगतां दिती लगाईआ। शब्द गुरू किहा, नहीं इस दे नाल सारी सृष्टी दा करना विहार, एह मेरी बेपरवाहीआ। क्यों शब्द दे शब्द सदा इख्त्यार, ते शब्द दा शब्द सदा मुखत्यार, शब्द दा शब्द सदा आगयाकार, शब्द निरगुण ते शब्द सरगुण, बिना शब्द तों मण्डल रास विच्च रंग जगत ना कोई वखाईआ। शब्द कहे मैं सतिगुरू मैं गुरदेव मैं सारी दीन दुनी दा बदमाश, बदी करन करौण वाला शब्द इक्क वखाईआ। पर एह मेरा मन दे नाल कम्म ख़ास, ते बुद्धि नाल टकराईआ। ते जिस वेले मैं आत्मा नूं देवां प्रकाश, उह मेरा मेरा नूर नूर नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर, शब्द गुरू कहे, मेरे कीते नूं नहीं सके वाच, जो अंदर सुणाया, ओन्हां ने रसना गाया, कलम शाही नाल लिखाया, लिख के सिफ्तां गए सुणाईआ। ओन्हां अक्खरां उत्ते धरवास रखाया, जिस नूं अग्ग नाल सारे देण जलाया, उह प्रभू अबिनाशी भुलाया, जो घर घर अंदर डेरा लाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न ओम जै जैकार कराया, जै जैकार करौण वाला नज़र कोई ना आईआ। शब्द कहे मेरा आदि अन्त किसे ना पाया, जे किसे उत्ते किरपा कीती ओन, भगवन्त नूं कन्त कह सुणाया, नारी हो के मैं साची सेव कमाईआ। जे किसे बुत्त विच्च नूर चमकाया, ओन ओस दा मंत दृढ़ाया, अठ्ठे पहर ध्यान लगाया, साह साह रसना गाया, चरन कँवल कँवल चरन बिना चरना तों सीस निवाया, ते शब्द गरू कहे मै किसे दा फेर वी नहीं माण वधाया, जो आया सो पार कराया, वेखो गुरू अवतार पैगम्बर किसे दे साहमणे नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि , आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। (१ चेंत श सं ५)

शब्द गुरू किहा याद रक्खो की संदेशा दे के गिआ नानक विच्च बगदादी, बगली कंधे उत्ते लटकाईआ। सदी चौधवीं कहे कोई रहणा नहीं किसे दा गाडी, हुक्म हक़ ना कोई सुणाईआ। उस वेले ठग्गाँ चोरां बदमाशां दी वधणी आबादी, मनमत करे लड़ाईआ। झगढ़ा पाउणगे मुल्लां काज़ी, ग्रंथी पन्थी वंड वंडाईआ । धर्म दा दिसणा नहीं कोई साथी, सगला संग ना कोई रखाईआ । सतिगुर दी मन्ने कोई ना आखी, गोबिन्द देवे अन्त सज़ाईआ। सभ दा पूरा करके भविख्त वाकी, वाक्या आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। (२६ पोह श सं ५)

बाज़ : पिछले गुरू दा चुक्का झेड़ा, घर विच्च रहण ना पाईआ। साहिब सतिगुर दा वसे खेड़ा, निरगुण आप वसाईआ। वड्डयां छोटयां बंने बेड़ा, बिरध बालां लए तराईआ। अग्गे ना करे हेरा फेरा, देवे माण वडयाईआ। जगत दुख जो पाया घेरा, सुख विच्च बदलाईआ। किरपा निधान करे मेहरां, मेहर नज़र उठाईआ। बत्ती साल जो रक्खया डेरा, बत्तीवें साल पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुशत उत्ते रक्खे हत्थ, अंगुशत नाल देवे दब्ब, कूड़ कुड़यार मेटे आप, सबब्ब आपणा इक्क जणाईआ।

दुख लथ्थे उपजे सुख, सुख दुख नाल वटाइंदा। उजल करे मात मुख, मुख मुख सिफ्त सालाहिंदा। सुफ़ल करे मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाइंदा। आप आपणी गोदी चुक्क, रोग सोग गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा विच्चों कढ्ढे कुट्ट, अग्गे आपणे घर वसाइंदा।

नाम बाज़ शब्द उडारी, गोबिन्द रिहा उडाईआ। निरगुण जोत नूर निरँकारी, पुरख अकाल वडयाईआ। साचे घोड़े शाहसवारी, शहनशाह आपणा आसण लाईआ। सोलां कलीआं करे शंगारी, सोलां इछया पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाज़ दए दरसाईआ।

साचा बाज़ चुगे चोज, प्रेम रस इक्को रखवाइंदा। मार उडारी गुरमुखां अंदरों कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। नाम अगम्म वजाए चोट, नगारा गोबिन्द हत्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाज़ इक्क दरसाइंदा।

साचा बाज़ इक्को एक, आदि जुगादि रखाया। बाज़ पकड़ी गोबिन्द टेक, टेक गोबिन्द पुरख अकाल धराया। कलिजुग अन्तम धार भेख, अव्वलड़ी चाल जणाया। जोत शब्द इक्को हेत, हितकारी फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाज़ इक्क उडाया।

साचा बाज़ लए अंगढ़ाई, आपणा बल धराईआ। गोबिन्द पृथ्मी आकाश तेरे नालों ना होए जुदाई , तेरी उंगली इक्को सोभा पाईआ। पिछले जन्म मैं बणया रिहा शौदाई, आपणे पैर तेरे हत्थां उत्ते टिकाईआ। मेरी चुंज किसे कम्म ना आई, जिस तेरे चरनां ना सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे मिले वधाईआ।

वेले अन्त बाज़ होया शरमसार, गोबिन्द अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं मेरे नाल कीता प्यार, क्यों नही मैनूं आपणा प्यार सिखाइंदा। मैं असमान विच्च लावां उडार, तेरे चरनां क्यों नहीं मस्तक लाइंदा। बिन तेरे होवां ख़वार, दर नज़र कोई ना आइंदा। मैं सुणया तूं ग़रीबां दा यार, निक्कयां बच्चयां माण दिवाइंदा। मेरे नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, जिनां नेत्रां नाल आपणी ख़ाक उडाइंदा। वेखीं मुड़ के मेरे नाल एवें ना करीं प्यार, दोए जोड़ वासता पाइंदा। मैनूं आपणे चरनां दी देवीं सच्ची छार, मस्तक टिक्का इक्क लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाज़ आपणी आप समझाइंदा।

गोबिन्द कहे सुण बाज़, बाज़ां वाला तैनूं समझाईआ। एस जन्म दा तेरा काज, पंज तत्त वडयाईआ। पीर पैगम्बर साहिब सतिगुरू महाराज, मेहरवान होए सहाईआ। तेरी रक्खे

लाज, मेरा बंधन पाईआ। सच उडारी धुर दी आवाज़, तेरा खंब नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

बाज़ अग्गों चरनी ढठ्ठ, आपणा माण गवाईआ। गोबिन्द उह वेला दस्स, जिस वेले मेला लएं मिलाईआ। तेरे कोलों फेर ना जावां नट्ठ, विछोड़ा कोई नज़र ना आईआ। मैं तेरा माणां रस, तूं मेरा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल इक्को इक्क जणाईआ ।

गोबिन्द कहे सुण बाज़ मित्र, मित्र प्यारा जणाईआ। हुण तेरा शिकार बटेरा चिढ़ीआं तित्तर, फिर लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। दो जहान तैनूं वेखण बिटर बिटर, तेरा भेव कोई ना पाईआ। तेरा गोबिन्द सच दवारिउँ आए निकल, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। नाम खण्डा धुर दरगाहों होए सिकल, कारीगर ना कोई बणाईआ। ना कोई सोना रुपा चांदी लाए पित्तल, लोहार तरखाण ना देवे कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बाज़ इक्को इक्क जणाईआ।

बाज़ कहे मैं तक्कां राह, इक्क ध्यान लगाया। वेखीं लक्ख चुरासी ना पाईं फाह, तेरी ओट तकाया। मैं पंछी बेगुनाह, पंखी हो के सेव तेरी कमाया। मैं अक्खीं दरसन करां आ, निज नेत्र ध्यान लगाया। सिर रखीं ठंडी छाँ, इक्क तेरी ओट जणाया। तूं पकड़ीं मेरी बांह, दोए जोड़ वासता पाया। मेरा पिछला बख्शीं गुनाह, मैं तेरे सीस उत्ते आपणा आप झुलाया। अन्तम दोए जोड़ मंगाँ पनाह, चरन कँवल ध्यान रखाया। वेखीं मैनूं ना देवीं सज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव आपणे विच्च रखाया।

गोबिन्द कहे जगत बाज़, तेरी बाज़ी दए उलटाईआ। गोबिन्द निरगुण हो के करे काज, निरगुण तेरी धार चलाईआ। पुरख अकाल मार आवाज़, दोहां लए मिलाईआ। तूं मेरी वेखी कलग़ी मैं तैनूं वखावां ताज, ताज इक्को नज़री आईआ। तूं सदा सुणीं मेरी आवाज़, सच संदेसा दिआं जणाईआ। जिन्नां हत्थां उत्ते रक्ख के तैनूं करया जगत काज, तेरे कोलों आपणा लेखा लवां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे बाज़ दए वडयाईआ।

बाज़ कहे गोबिन्द दस्स सॅच, की विच्च भेद रखाया। मैं तेरे उत्ते रिहा नच्च, आपणा सांग वरताया। तूं जोधा सूरबीर हो के रक्खया हठ, मेरा माण वधाया। मैं चौती साल तेरे चरनां ना गिआ ढठ्ठ, मूर्ख मुगध मूढ़ अखवाया। कवण वेला मेरा पिछला लेखा दएं कट, कटाकश आपणा नाम लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा खेल जणाया।

तेरा पिछला लेखा कटांगा। आपणी करनीउँ कदे ना हटांगा। फड़ चरनां उत्ते सट्टांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बाज़ इक्को दवारे रक्खांगा।

गोबिन्द बाज़ दोवें नज़र ना औंदे, हरि शब्दी रूप वटाईआ। पुरख अकाल दा ढोला गौंदे, वज्जे नाम वधाईआ। भगत भगवान मेल मिलौंदे, घर घर फेरा पाईआ। नाम उडारी इक्क

रखौंदे, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बाज़ गोबिन्द दए जणाईआ।

गोबिन्द बाज़ पहली चेत्र देवे दस्स, कवण रूप वटाईआ। चौथी मंज़ल जाए ढठ्ठ, चढ़ चरनां सीस निवाईआ। मेरा पिछला लेखा कट, अग्गे दुःख रहे ना राईआ। प्रेम प्यार दी मार चपट, झपट इक्को इक्क दरसाईआ। बिन ढाहिआं जावां ढठ्ठ, जित तेरे हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत बाज़ रक्खे लाज, गुरमुख साचे माणस रूप वटाईआ।

जीवण विच्च बदले जीवण, जीवण जुगत वडयाईआ। नाम रस अमृत पीण पीवण, पी पी खुशी वखाईआ। सरनाई सदा थीवण, माण अभिमान मिटाईआ। चरन कँवल गुर साचे नीवण, निउँ निउँ लागण पाईंआ। साचा बीज नाम बीवण, पत्त डाली फुल महकाईआ। नाता तुटे साढ़े तिन्न हत्थ सीमन, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला दुःख मेट करे सुरजीत, सरजीत प्रभ चरन होए अतीत, त्रैगुण तीनों ताप रहण ना पाईआ। (२३ फग्गण २०१६ बि)

बावन अक्खर : आपणा अक्खर शब्द धार, हरि साचे आप उपजाईआ। लेखा लिख ना सके कोई विच्च संसार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। चार जुग खेल नयार, रूप अनूप वटाईआ। कोई ना जाणे बवंजा धार, बावन अक्खर रहे सलाहीआ। पैंतीस अक्खर कर त्यार, जगत विद्या करे पढ़ाईआ। सतारां अक्खर हरि निरँकार, आपणे अंदर बैठा बन्द कराईआ। गुर पीर ना जाणे कोई अवतार, ना सके कोई जणाईआ। गा गा थक्के ऊँच अगम्म अपार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नानक दरस इक्क निरँकार, एका दूजा भउ चुकाईआ। आप ढह ढह पए दवार, आपे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधाईआ।

बवंजा अक्खर तेरी धार, छेवें घर वसाईआ। पंचम गुर पंच शब्द धुनकार, पंचम रिहा गाईआ। नानक खोल्हे इक्क किवाड़, राम रामा रूप दरसाईआ। अछल अछल्ल खेल करतार, गोपी काहन आप नचाईआ। आपे जोती नूर कर उजिआर, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। आपे सन्त भगत दए आधार, नाम नामा आप अखवाईआ। आपे आदि शक्त कर उजिआर, नमो सति आप वडयाईआ। आपे ब्रह्ममत दए आधार, पारब्रह्म भेव ना राईआ। आपे उतपत करे सर्ब संसार, आपे मेट मिटाईआ। आपे बीज बीजे साचे वत ब्रह्मा विष्न शिव लए उभार, आपे आपणे विच्च समाईआ। आपे कलिजुग अन्तम लै अवतार, खेले खेल बेपरवाहीआ। छेवें घर बंन्ही धार, बवंजा भेव ना रिहा खुल्हाईआ। बवंजा कलीआं तन शंगार, बन्दी छोड़ बन्द कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा धर, आपणे अक्खर आप दबाए आपणे पत्थर, ना कोई सके भार उठाईआ।

पंज तत्त कर उजिआर, पैंती अक्खर करे पढ़ाईआ। सरगुण रूप हो उजिआर, निरगुण पड़दा आपणे उप्पर पाईआ। आपणा खोल्ह आप किवाड़, आपे बैठा बन्द कराईआ। चौथे जुग चौथी धार, करे खेल आप निरँकार, ना कोई दूसर बणे लिखार, ना ध्यान कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ।

कलिजुग अन्तम खेल अपारा, हरि जोती जोत जगाइंदा। रणवास ना फिरे बण राम अवतारा, तीर कमान ना कोई उठाइंदा। रथ रथवाही ना कृष्न मुरारा, गीता ज्ञान ना कोई दृढ़ांइंदा। नानक गुर ना बण भिखारा, चारों कुण्ट फेरी पाइंदा। अरजण गुर ना करे विचारा, अगाध बोध ना कोई दृढ़ांइंदा। गुर गोबिन्द ना खण्डा तेज़ कटारा, सीस दस्तार ना कोई बंधाइंदा। बसतर शस्त्र ना तन शंगारा, ना कोई असव घोड़ा दौड़ाइंदा । पैंतीस अक्खर ना कोई प्यारा, ना कोई लेख लिखाइंदा। मात पित ना सुत दुलारा, भैण भाई ना कोई जणाइंदा। बवंजा अक्खर अंदर आपणा आप कर बन्द किवाड़ा, बवंजा साल छुपाइंदा। जगत वेखे पंज तत्त हड्ड मास चम्म नाड़ा, हरि का रूप दिस ना आइंदा। पंचम जेठ सभागी दिहाढ़ा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। पुरख अकाल सच अखाड़ा, लोकमात लगाइंदा। नर निरँकार धुर दरगाही लाड़ा, एकउँकारा आप अखवाइंदा। नाम रत्त लहू रक्खे गाड़ा, गुरमुख साचे आप उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवंजा बवंजा बवंजा वेख वखाइंदा।

बवंजा अक्खर हरि का लेख, हरि हरि भेव छुपाया। गुर अरजन आपणे नेत्र पेख, बिन हुक्म लिख ना पाया। आपणी करे आप आदेस, नानक नूर नज़री आया। अगम्म अगम्मड़ा वस्सया अगम्मड़े देस, लोकमात वेखण आया। हत्थ खूंडी ना भूरी खेस, ख़ाली हत्थ वखाया। हरि हरि मीता नर नरेश, नर नरायण नाउँ धराया । जुग जुग विछड़े आपे रिहा वेख, मेल विछोड़ा आपणे हत्थ रखाया । शाह सुल्ताना वड नरेश, मरगेश नाम धराया। किसे ना चले अग्गे कोई पेश, दो जहानां तिन्नां लोकां चौदां हट्टां लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां, उत्भुज सेतज खाणी बाणी अल्ला राणी अञ्जील कुरानी वेद पुरानी कोटन ब्रह्मा विष्न महेश, कोटी कोट बैठे सीस झुकाया। कलिजुग तेरी अन्तम धार, हरि हरि जोत हरि निरँकार, आप आपणा लै अवतार, आप सुहाए बंक दवार, आपे माता पिता सुत दुलार, आपे वरन गोती वस्सया बाहर, अंदर बाहर आप अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवंजा अक्खर आपणे हत्थ रखाइंदा। (५ जेठ २०१६ बि)

गाया सोहला हरि बनवारी, बावन अक्खर अक्ख खुल्ाईआ। पैंती अक्खर बण लिखारी, गुर अरजन वड वडयाईआ। सत्त सतारां रूप न्यारी, दस सत ना बूझ बुझाईआ। लेखा लिखया धुर दरबारी, हरि मन्दर जोत जगाईआ। कूके सुणाए बंक बंक दवारी, आप हो जाईआ। कलिजुग अन्तम करे खुआरी, जूठी झूठी क्रिया मेट मिटाईआ। सतिजुग साचे आए वारी, सति सतिवाद रखाईआ। बावन अक्खर बणे आप लिखारी, इकावन बावन भेव खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे साचा वर, आपणी जोती अंदर धर, जगत सहिंसा चुकाए डर, तोड़णहारा हउमे गढ़, साचे मन्दर आपे चढ़, गुरमुख साजण लए फड़, आप आपणा मेल मिलाइंदा। (२१ जेठ २०१६ बि)

ब्रह्मे बूझ कर विचार, हरि पुरख निरञ्जण आप सुणाया। चार जुग एका बंन्ने धार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा बंधन पाया। इक्क चौकड़ी चवी अवतार, दस अठ्ठ अठारां वेख

वखाया । बावन अक्खर करे त्यार, पैंती अक्खर लोकमात प्रगटाया। सतारां अक्खर गुर पीर ना पावण सार, आपणे अंदर बन्द कराया। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा कर कर पसार, तेरा लेखा वेख वखाया । विष्नूं दे दे थक्के सर्ब भंडार, जीव जंत तृप्त ना कोई कराया । अन्तम आए चल दरबार, आपणी विघ्या दए सुणाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, हउँ ढठ्ठा तेरी सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे एका अक्खर रिहा पढ़ाया। (६ जेठ २०१७ बि)

बेगमपुरा : बेगम : बेगमपुरे विच्च मिले हत्थ, जगत अक्खां नज़र किसे ना आईआ। जिस दी महिमा आदि जुगादि गौंदे रहे अकथ्थ, रसना जिह्वा ढोले बत्ती दन्द सुणाईआ। जिस गृह मन्दर दीपक जोत जगे लट लट, अज्ञान अन्धेरा नज़र कोई ना आईआ। निरगुण निरवैर दीन दयाल बैठा समरथ, साहिब सतिगुर सोभा पाईआ। मन मत बुद्ध जगत विद्या चले ना कोई वस, लिखया लेख संग ना कोई रखाईआ। बिन रसना जिह्वा देवे अगम्मी रस, अमृत झिरना इक्क झिराईआ। बिन छप्पर छन्न चार दिवारी उह खेड़ा रिहा दस्स, सूरज चन्द ना कोई चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान खाणी बाणी अञ्जील कुरान ना कोई दिसे तीर्थ तट्ट, हट्ट वणजारा रूप ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेगम पुरा बण बेगम आप सुहाइंदा।

बेगम बणे जोत निराली, थान आपणी सेज सुहाईआ। आदि जुगादि रहे दीवाली, दीपक इक्को इक्क रुशनाईआ। सौहरे पेईए नानक दादक भैण भाई भैनोईआ ना कोई साली, सज्जण संग ना कोई वखाईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेतज जगत बनास्पत ना कोई पत डाली, समुंद सागर उजाड़ पहाड़ रूप ना कोई वखाईआ। ना घनईया ना कोई काहन ना कोई गऊआं बणे पाली, बंसरी नाद धुन शब्द राग ना कोई अलाईआ। एका रंग गहर गम्भीर बिन सरीर करे खेल निराली, लाशरीक सच तौफ़ीक इक्को नूर खुदाईआ। बेग़म पुरे उह बेग़म वसे ठीक, जिस दी आदि जुगादि साध सन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर करन उडीक, नित नवित्त नैण लोचण सुहञ्जणे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर बैठे ध्यान लगाईआ। जे उह बेग़म करे सच प्रीत, प्रेम प्रीती अंदर गुरमुख आपणे घर मंगाईआ। उस नूं मिल के हरिजन कहे बेग़म पुरा है एह बेग़म पुरा ठीक, जिस अंदर रोग सोग चिन्ता दुःख नज़र कोई ना आईआ। इक्को जाप श्री भगवान मेहरवान नौजवान नज़री आए अतीत, सति सतिवादी आपणा आसण लाईआ। फड़ फड़ बाहों उथे इक्क दूजे नूं कोई ना सके घसीट, संगी साथी सारे दित्ते तजाईआ। इक्क इकल्ला आवे जावे आप चलावे आपणी रीत, रीतीवान इक्को इक्क अखवाईआ। मस्जिद मन्दर शिवदवाला मठ्ठ ना कोई मसीत, अञ्जील कुरान तीस बतीस हदीस ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देखणहारा उह घर, जिस घर ग़मी खुशी रूप ना कोई वटाईआ।

ग़मी खुशी ना कोई ग़म, ग़फ़लत नज़र कोई ना आईआ। हरख़ सोग चिन्ता दुःख पवण सुआस ना कोई ग़म, दमा दम रंग ना कोई वखाईआ। तन माटी पंज तत्त कोई ना चंम, चम्म दृष्टी ना कोई वडयाईआ। इक्को नूर श्री भगवन, शाह पातशाह सच करे रुशनाईआ।

कोई वेख ना सके नेत्र अंनू, बिन सतिगुर पूरे समझ किसे ना पाईआ। कोटन कोट नैण शरमावण सूरज चन्न, चन्द चांदनी ना कोई चमकाईआ। जिस वेले श्री भगवान भगत आपणे सद्दे जन, तिनां धन्न जणेंदी माईआ। नज़री आए सच दवारा जिस दा रूप अगम्म, अगम्मड़ी खेल आप कराईआ। उस वेले गुरमुख कहे धन्न धन्न धन्न पुराबेग़म बेग़म वसे बेग़ंम, इक्को बैठी नज़री आईआ। बेग़म कहे मैं बड़ी सोहणी, मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। मैं आदि जुगादि भगतां मोहणी, मोह मुहब्बत विच्च सदा फसाईआ। जिस दे नेड़ ना आवे होणी, राए धर्म ना डर वखाईआ। मैं उनां दी करां बौहणी, पैहलां आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख के आया उह घर, जिस घर बेग़म इक्को नज़री आईआ।

आओ सन्त जी चलीए बेगमपुरे, पौड़ी डण्डा नज़र कोई ना आईआ। केहड़ी मंज़ल पहुंचो तुरे, आपणा भेव छुपाईआ। केहड़ा मंत्र फुरना फुरे, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। के हड़ी धार गुरमुख चढ़े, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। केहड़े थां तों बैठे सारे पिछांह मुड़े, अग्गे राह ना कोई वखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे कहण असीं गुरे, निगुरा मात ना कोई अखवाईआ। उनां नालों होर कौण हैण बुरे, जो झूठ गा गा जगत भुलाईआ। सन्त सहेली नूं सन्त साजण पुछे दस्स कुड़े, उह कर्मां वाला केहड़ा थां जिस घर बह बह सोभा पाईआ। सन्त सहेली कहे नी मैं वेख्या उथे कोटी कोट जांदे रुड़े, अग्गे मेल ना कोई मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेगमपुरा पूरब घर, अगला लेखा लेखे नाल मिलाईआ।

आउ सन्त जी चुक्कीए कदम, सज्जा खब्बा पैर उठाईआ। वेखो बेगमपुरे दा हुजरा, हरि हरि आप जणाईआ। उथे सन्तां लग्गया मुजरा, सोहणा रहे नाच वखाईआ। हुण वेला नहीं जो पिच्छे गुजरा, बण साख्यात इक्क दूजे नूं देईए समझाईआ। कोई भेत नहीं गुझला, गुज्झी कंदर दे वखाईआ। परम पुरख परमात्म सदा सदा सद उजला, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। अग्गे खेल नहीं कोई धुंदला, अन्ध अन्धेर रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह साफ़ करन नूं हत्थ विच्च फड़ के मुंगला, दो जहानां दए डराईआ।

एह वड्डा सन्तां दा सन्त अखाड़े विच्च दंगला, पैहलवान कर लंगोटे चारों कुण्ट फिरन वाहो दाहीआ। कूड़ी निन्दया निन्दक ना कोई चुगला, चुगली मारन कोई ना आईआ। आओ साहमणे हो के करीए शुगला, शुगल विच्च लोकाईआ। इक्क पासे शाह सुल्तान मुगला, बेपरवाह बेपरवाहीआ। वेद पुरान शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान कोई भेव ना जाणे मुढला, भेव अभेद ना कोई खुल्लाईआ। धुर दा भेव दस्से कोई ना बाकी, कलिजुग सार किसे ना आईआ। सुणावे कोई ना धुर दी साखी, साख्यात घर ना कोई जणाईआ। बेगमपुरा जगत जहान जीव खेल समझया बाजीगर नाटी, डोरू डंक सारे रहे वजाईआ। बिन सतिगुर पूरे किसे पार ना कीती घाटी, नैण ना मिल्या सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेगमपुरे दी खोल्ल ताकी, हरिजन आपणे अंदर लए लंघाईआ।

दो जहानां दे विच्च इक्क तस्वीर, तसबी माला दोहां नज़र ना आईआ। दो जहानां अंदर इक्क पीर, डाहढा डेरा लाईआ। दो जहानां अंदर इक्क तकदीर, जो तकदीर दए

वडयाईआ। दो जहानां अंदर इक्क जंजीर, जो डोरी तन्द बंध बंधाईआ। दो जहानां अंदर इक्क तासीर, जो गल्लां बातां नाल खुशी कराईआ। दो जहानां दे अंदर इक्क पीड़, इक्क दूजे नूं वेखण चाईं चाईंआ। दो जहान चोटी मंज़ल चढ़ आ वेखी अख़ीर, बिन अक्खरां अक्खर नज़र कोई ना आईआ। साहिब सतिगुर हत्थ फड़ी शमशीर, शब्द खण्डा चंड परचंड चमकाईआ। दोवें वेखो तक्क के ला नज़ीर, निक्की निक्की धार हरि बंधाईआ। मस्तकों अग्गे छोटी जिही दिसे लकीर, रंग बदरंग रही बदलाईआ। उस दे मगर जो लंघे धीर, पैंडा मुक्के वाहो दाहीआ। अद्धविचकार सतिगुर मिले ना कोई बसतर ना कोई चीर, तत्तव तत्त ना कोई वडयाईआ। फड़ के बाहों चोटी लै जाए अख़ीर, जिस दा नाउँ बेगमपुरा धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एह वस्त सिरफ़ जन भगतां दिती बेनज़ीर, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाईआ।

एह नूर प्रभू दा नुक्ता, बिन कलम छाही बणाईआ। एह बड़ा पुखता, हिलाइआं हिल सके ना राईआ। एह नूर धुर दा नुसखा, चमकया हत्थ ना किसे फिराईआ। एह नूर ना फिरदा ना तुरदा, गली कूचे ना रंग रंगाईआ। एह विहार करे आपणी लोड़ दा, लोहड़ा आपणा भेव ना किसे खुलाईआ। किधरे लौंदा किधरे तोड़दा, तोड़ विछोड़ा आपणा खेल रचाईआ। पैहला खेल पंज तत्त चोर दा, चोरी चोरी आपणी कार कमाईआ। एह खेल अगम्मे बांके छोहर दा, शहनशाह निरगुण रूप वटाईआ । सन्त सज्जण आपणे लोड़दा, लक्ख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जिस नुकते विच्चों नुकते बणा के गुर अवतार पीर पैगम्बर तोरदा, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म मनाईआ। ओस नुकते विच्चों मंत्र कढ्ढे फोरदा, जो फुरना सभ दा सार शब्द अखवाईआ। एह खेल नहीं कूड़ी ताकत ज़ोर दा, बलीआं बल ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नुक्ता बिन नुकतिउँ आपणे नुकते विच्च रखाईआ। (११ माघ २०२० बि)

हुण कोई भगतां दी धार रहणी नहीं बेगानी, जिस नूं बेगमपुरा कहन्दे उस बेगमपुरे दी बेगम हरिजन देणा बणाईआ। (१७ हाढ़ श सं ७)

बोल : बोल बोल विकार वधाया। सिख सो जो शांत रूप समाया । क्रोध कपट नूं परे हटाया। विच्च विकार ना मन डुलाया। सतिगुर पूरा घर में पाया। महाराज शेर सिँघ विछड़यां मेल परे हटाया। (५ चेत २००७ बि)

प्रभ पूरा पैहले तोल के, फिर बण प्रभ का चेरा। सच रसना बचन बोल के, गुरसिख भुल्ल ना जाए मेरा। साचा शब्द दे प्रभ खोल् के, मद मास ना आवे नेरा। प्रभ मारे जगत वरोल के, भंग करे बचन जन केरा। नाम सच मोती जगत वरोल के, विच्च संगत गुर लाए डेरा। मुखों कहन्दा सति बोल के, कलिजुग डोले ना सिख मेरा। जे जगत भुलेखा भुल्लणा, गुरसिख ना बणना। जे पूरे तोल ना तुलणा, दुःख मद मास दा जरना। जे कलिजुग नहीं जे रुलणा, गुरचरन लाग कल तरना। महाराज शेर सिँघ अडोल कदे नहीं डुलणा, गुरसिख अडोल जगत विच्च करना। (१५ चेत २००८ बि)

सोहँ शब्द साचा मुख बोल, आत्म देह होए उजिआरा। जीव दृष्ट प्रभ देवे खोल्, करे

जोत देह आकारा। अनहद शब्द मन वजाए ढोल, झन झन देह होए झनकारा। अमृत बूंद कँवल में डोलू, खोलू देवे प्रभ दसम दवारा। करे दरस प्रभ जोत अमोल, नज़री आवे आप एकँकारा। जोत संग प्रभ देवे मेल, जोत सरूप होवे जीव आधारा। महाराज शेर सिँघ घर तेरा खेल, खेल गिआ लै निहकलंक अवतारा। (२५ चेत २००८ बि)

गुरसिख बोले मुखो धन्न धन्न धन्न, महाराज शेर सिँघ जिस दरस दिखाया। (१२ विसाख २००८ बि)

बेमुख देवे कौड़े बोल, दर आए जाए झख मारा। अन्तकाल कल मारे रोल, कलिजुग मिले ना कोई सहारा। भगत जनां सद है कोल, रक्खे लाज आप मुरारा। गुरसिख आत्म सदा निरोल, सोहँ शब्द पार उतारा। महाराज शेर सिँघ जीव वसे कोल, देह दीपक जिस कीआ उजिआरा। (१३ वसाख २००८ बि)
रसन बोल जो बोलण कूड़त, विष्टा मुख हरि आप रखाना। आपे पाए आत्म जूड़त, धर्म राए दे दर टिकाना। (६ जेठ २०१० बि)

मिठा बोल स्वामी बोले एक, शब्द अगम्मी नाम दृढ़ाईआ। भगतां दे के भावना वाली टेक, भय भउ भरम सर्ब मिटाईआ। जुग चौकड़ी जन्म कर्म दा बदल देवे लेख, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ । आत्म परमात्म खोलू देवे भेत, पर्दा रहण कोई ना पाईआ। रूप दरसाए नेतन नेत, निज नैण करे रुशनाईआ। कलिजुग अगन ना लावे सेक, तत्ती भाह ना कोई तपाईआ। मालक हो के नर नरेश, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। निरअक्खर देवणहार उपदेश, उपनिशद लोड़ रहे ना राईआ । झगढ़ा मुक जाए जगत कतेब, कुतबख़ाना ना सिफ्त सालाहीआ। दग़ा रहे ना झूठ फ़रेब, फ़ैसला हक़ीक़त हक दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले बणा के नेक, बदी अंदरों दए गवाईआ। एह खुशीआं वाला भगतां सोहणा सुहावणा चेत, शहनशाही ढोले गाईआ। दवारा वसणा इक्को देस, दिशा दिसन्तर दए गवाहीआ। झगढ़ा चुकणा माया परदेश, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सभ तों वक्खरा कर के वेस, रूप अव्वलड़ा आप प्रगटाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा महेश, शंकर शाकर हो के सीस निवाईआ । हुण अगे कोई ना किहो पूरन सिँघ विच्च जोत परवेश, परमेश्वर आपणा रूप लिआ बदलाईआ। तिन्न अस्सू तों वखरी होणी खेड, सोवत जागत इक्को रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिठा बोल दए समझाईआ।
मिठा बोल बोले स्वामी तुहाढ्ढा, धुर दी धार जणाईआ। मालक दो जहान हो के डाहडा, डौरू डंका रिहा वजाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी रहणी यादा, यादाशत आपणी दए बणाईआ। जिस नूं वाहिगुरू राम खुदा कहन्दे गाडा, गारडीअन, सभ दा नज़री आईआ। जिस दा अगम्म अथाह शब्द अनाद अगम्मी वाजा, सुर ताल ना कोई दृढ़ाईआ। जिस दा खेल बिन मक्के काअबा, बिन तत्तां वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कर वखाईआ।
मिठा बोल बोले एकँकार, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। सज्जणां दा मीत मुरार, पतिपरमेश्वर

बेपरवाहीआ। आत्म दा उधार, ब्रह्म दा शिंगार, निरंतर नूर बेनज़ीर नज़री आईआ। प्रेम दा आबशार, गुलशन दी बहार, शाही शबाब रब्बी अहिबाब बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनबोलत राग जणाईआ। (२७ भादरों श सं १)

बन्दा : बन्दगी : गुरमुखां पिच्छे करे बन्दगी, हरि जू बन्दना आप जणाइंदा। आपणी हत्थीं तुहाढ़े अंदरों कढ़े गंदगी, कूड़ी क्रिया मैल धवाइंदा। दर घर गुरमुखां करे मुशंदगी, मुशकल सभ दी हल्ल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बन्दगी इक्क जणाइंदा।

साची बन्दगी हरि का चरन, सतिगुर सच सच समझाईआ। बिन नेत्रों खुल्ले नेत्र हरन फरन, भेव अभेव दए जणाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, गेड़ चुरासी दए कटाईआ। साचे पौड़े गुरमुख चढ़न, जिस जन आपणी दया कमाईआ। बिन बन्दगीउँ दरगाह साची वड़न, जिस मिल्या सच्चा माहीआ। आत्म परमात्म सोहँ ढोला पढ़न, ढोला हरि जू रिहा जणाईआ। बण विचोला आए खड़न, खिड़की काया कुंडा लाहीआ। नाता तोड़े बरन वरन, सरन आपणी इक्क तकाईआ। बिन बन्दगीउँ गुरमुख हरि का दर्शन करन, पिछला लेखा लेखे पाईआ। बन्दगी वेख इक्क नरैण, नरैण हरि जू आप जणाइंदा। दर दरस पेखत नैण, नैण नैणां हरस मिटाइंदा । जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुरान सिफ्त कहण, सो तुहाढ़ी सिफ्त आप सालाहिंदा। बिन सद्दिआ पुच्छयां गुरमुखां आया लैण, लहणा पिछला वेख वखाइंदा। बिन साकों बणया साक सज्जण सैन, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्दगी बन्दे इक्क जणाइंदा।

साची बन्दगी वेख बन्दे, बिन बदनों आप जणाईआ। रसना जिह्वा झूठे धंदे, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। पढ़न वाले सारे अन्धे, आत्म पर्दा कोई ना लाहीआ। दीन दयाल साहिब सतिगुर जिस जन आपणा राग सुणाए कन्ने, काग हँस बणाईआ। सो गुरमुख सच बन्दगी इक्को मन्ने, जिस बन्दगी नाल प्रभ मिले नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त इक्को इक्क वरताईआ।

बन्दगी देवे बन्दी तोड़, बन्दीख़ाना ना कोई रखाइंदा। नाता चुक्के मड़ी गोर, अन्ध घोर सर्ब गवाइंदा। आपणे संग लए तोर, तारनहार दया कमाइंदा। नरैण नरायण पै गई लोड़, लोड़ींदा साजण घर विच्च आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम बन्दगी हरिजन झोली पाइंदा। (१७ मध्घर २०१६ बि)

मैं छोटा पुत्त सोहणा चंगा, कलिजुग इक्को इक्को सुणाइंदा। तेरा हुक्म वजाया मरदंगा, मरदानगी आपणी इक्क रखाइंदा। जीव जहान कीता नंगा, पड़दा उप्पर ना कोई पाइंदा। नेत्र हुन्दआं होया अन्धा, तेरा रूप नज़र किसे ना आइंदा। बिन बन्दगीउँ ख़ाली कीता बन्दा, बन्दीख़ाना इक्क वखाइंदा। तेरी मेहर अंदर आया अन्तम कन्ढ़ा, कन्ढ़ी बह के डेरा लाइंदा। तेरा खेल सदा बहुरंगा, भेव अभेद ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली हत्थ दर वखाइंदा । कलिजुग कहे मेरे ख़ाली हत्थ, ख़ाली करी लोकाईआ। (१६ फग्गण २०१६ बि)

सतिगुर प्यार सच्चा बंधन, बन्दगी इक्क जणाईआ। सतिगुर प्यार मस्तक चन्दन, टिक्का नाम लगाईआ। सतिगुर प्यार अनन्द अनन्दन, निज घर वेखे बेपरवाहीआ। सतिगुर प्यार सदा बख्शंदन, डुबदे पाथर लए तराईआ। सतिगुर प्यार गुरमुख साचे मंगण, जिस अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप हो जाईआ।

सतिगुर प्यार वस्त अमोल, अमोलक आप वरताइंदा। सतिगुर प्यार भंडारा अनतोल, कंडा तराज़ू ना कोई तुलाइंदा। सतिगुर प्यार सदा अडोल, दो जहान ना कोई डुलाइंदा। सतिगुर प्यार सो सतिगुर कोल, बिन गुरमुखां हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। सतिगुर प्यार अंदर बाहर वजाए ढोल, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। (२३ विसाख २०२० बि)

जगत बुद्धि लोचे जग्ग, जग जीवण नज़र किसे ना आईआ। सोचां अंदर लग्गी अग्ग, शाह रग उप्पर दरस कोई ना पाईआ। हउमे हंगता विच्च गए बज्झ, टिकण ना देवे जगत चतुराईआ। जिन्ाां मिल्या साहिब सतिगुर समरथ, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। उह उच्ची कूकण दोवें कर के हत्थ, जीव जंत सर्ब समझाईआ। किसे कम्म ना औणी बुध मत, अग्गे होए ना कोई सहाईआ। लेखे लाओ आपणी रत्त, प्रभ चरन मिले वडयाईआ। धन्दयां विच्च गाओ जस, बन्दयां विच्चों बन्दगी इक्को भाईआ। गन्दयां विच्चों पिच्छे जाओ हट, पल्लू आपणा आप छुडाईआ। मन नीवां कर के जाओ ढठ्ठ, ढठ्ठआं लज्या कोई ना आईआ। माणस देही साचा सौदा दमड़े लउ वट, काची माटी अन्त कम्म किसे ना आईआ। पढ़ पढ़ सटीक रसना जिह्वा रहे रट, रट्टा आवण जावण ना कोई मुकाईआ। सतिगुर मार्ग रिहा दस्स, नानक गोबिन्द शब्द पढ़ाईआ। जिन्ाां पारब्रह्म प्रभ होया वस, तिन्ाां निउँ निउँ चरन लागे सर्ब लोकाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा गावण जस, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। गुरमुखां कोल चौदां विद्या होई भट्ठ, इक्को अक्खर मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आदि जुगादि लक्ख चुरासी घट घट अन्तरजामी, बोध अगाध शब्द बाणी, गुर बाणी राग अलाईआ। (१२ जेठ २०२० बि)

मन चंचल जगत अन्धा, दह दिशा उठ उठ धाहीआ। बिन सतिगुर सरन ना कोई बन्दा, बिन बन्दगी सतिगुर मिले ना बेपरवाहीआ । जगत वासना खोटा गंदा, कूड़ी क्रिया गंढ पवाईआ। दीन दयाल सदा बख्शंदा, बख्शणहार बेपरवाहीआ। वस्त अमोलक इक्को देंदा, सति साची झोली पाईआ। नाम जैकारा इक्को कहन्दा, आत्म परमात्म ढोला गाईआ। घर सेज सुहञ्जणी आ के बहन्दा, सोभावन्त सोभा पाईआ । निज आसण आपणे डेरे रहन्दा, नज़र किसे ना आईआ। ना कुछ खांदा ना कुछ पींदा, प्रेम प्रीती मंग मंगाईआ । घोल घुमाई विटुह थींदा, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। बीज अगम्मी इक्को बींदा, बीजणहारा बेपरवाहीआ। ना मरया ना दिसे जींदा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ । ना आलस ना कोई नींदा, ग़फ़लत रूप ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन विछड़े आप मिलाईआ। (५ भादरों २०२० बि)

चरन गुरू गुर साचा बंधन, हरि बन्दगी नाम जणाइंदा। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, दुरमत मैल धवाइंदा। कूड़ी क्रिया करे खण्डन, खण्डा नाम उठाइंदा। सुरत सवाणी ना होए रंडन, शब्द सुआमी कन्त मिलाइंदा। देवे ओढन होए ना नंगन, नाम दोशाला हत्थ उठाइंदा। गुरमुख गुरसिख भगत आदि जुगादि कदे ना संगण, लोक लज्जया विच्च कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां गुर गुर इक्क बुझाइंदा।

गुरमुख साची सिख्या सच विचार, श्री भगवान आप जणाईआ । सांझा सभ नाल करो प्यार, दूई द्वैत ना कोई रखाईआ । हिरदा सीतल सति शांत करो वसाल, गहर गम्भीर रूप वटाईआ। जे कोई चंगा मंदा बोली कढ्ढे गाल, तिस आखो वाहवा मेरे भाईआ। तेरे उप्पर जिस वेले मेरा साहिब होए दयाल, तेरी होछी मत दए गवाईआ। उठ के वेख आपणी काया मन्दर अंदर धर्मसाल, तेरा सतिगुर तैथों बैठा मुख छुपाईआ। कूड़ी क्रिया होइउँ क्यों बेहाल, बेहबल हो के मारें धाहीआ। पारब्रह्म दा ब्रह्म सरूप तूं निक्का छोटा लाल, मूर्ख तैनूं आपणी सुरत समझ ना आईआ। मन वासना पाइआ जाल, त्रैगुण घेरा रही पाईआ। उठ वेख सभ दे सिर ते कूके काल, जिस पिओ दादा रहण दित्ता कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां साची सिख्या इक्क समझाईआ । (६ अस्सू २०२० बि)

सतिगुर शब्द कहे मैं बड़ा दलेर, हौसले वाला नज़री आईआ। जुग चौकड़ी पिछों पिछले विछड़े लिआवां घेर, घेरा आपणा इक्क रखाईआ। जन्म कर्म दा कट के गेड़, गेड़ा गेड़े विच्चों भवाईआ । मुहब्बत अंदर कर के मेहर, मेहर अंदर महबूब दिआं मिलाईआ । जिस मेहरवान नूं आदि जुगादि सारे कहन्दे शेर, शेर शहनशाह रूप वटाईआ। उस दा लेखा सदा बिन ज़बर ज़ेर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी कर कर हेर फेर, भरमी भरमां विच्च भुलाईआ। गुरमुख गुरसिख शब्द दुशाले लए लपेट, साचा ओढन इक्को उप पर पाईआ। दो जहानां बण के खेवट खेट, बेड़ा पार किनारे दए लगाईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सच्चा सुच्चा होया नेक, जिस दी नेकी बदीआं विच्चों बाहर नज़री आईआ। बन्दगी बन्दा करके बणे बिबेक, बन्दगी उह जो बन्दना प्रभू सिखाईआ। जिन्नां साहिब सतिगुर उप्पर रक्खी टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। जो सच दवारे खुशीआं अंदर अन्तम लैण खेड, जगत खेल पिछली पिच्छेदेण तजाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म अबिनाशी करता सन्त सुहेले हौली हौली सच दवारे रिहा भेज, जिथ्थे भजन बन्दगी इक्को नज़री आईआ। निगाहबान हो के आप रिहा वेख, दूजे डोर ना किसे फड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे हेत, हितकारी हो के हत्या तों लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रंग रतिआं विच्चों रंग आपणा नाम चढ़ाईआ। (२५ जेठ २०२१ बि)

सचखण्ड निवासी तेरा मार्ग चंगा, दो जहानां नज़री आईआ। निरगुण निरवैर तेरा मरदंगा, शब्द अनाद करे शनवाईआ। अमृत रस तेरा सच सरोवर गंगा, गंगा गोदावरी रही शरमाईआ।

नाम निधान तेरा छन्दा, सोहँ ढोला बेपरवाहीआ। मूर्ख मुगध चतर सुघड़ बणाए गंदा, दुरमत मैल धवाईआ। अन्तर आत्म दे के परमानंदा, निजानंद करे रसाईआ। तेरा दवारा सदा ठंडा, अमृत मेघ बरसाईआ। आपणी बन्दगी विच्च लगा दे भुल्लया बन्दा, बन्दना दे समझाईआ। तूं सर्ब स्वामी सदा बख्शंदा, बख्शिश तेरी नज़री आईआ। तूं मालक जेरज अंडा, उत्भुज सेतज तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि तेरी ओट तकाईआ। (१७ कत्तक २०२१ बि)

बिन गुर : बिन गुर किसे ना मिले वड्डिआई, बिन गुर किसे ना सोझी पाई। बिन गुर जोत ना किसे जगाई। बिन गुर अज्ञान अन्धेर ना विच्चों जाई। बिन गुर देह दीपक विच्च ना जोत जगाई। बिन गुर सोझी किने ना पाई। बिन गुर मिले ना नाम वड्डिआई। बिन गुर भुली फिरे लोकाई। बिन गुर झूठे धंदे जन्म गवाई। बिन गुर माया ममता विच्च सृष्ट रहाई। बिन गुर कोई ना पार लंघाई। बिन गुर जन्म जन्म दुःख पाई। बिन गुर कोई ना चरन लगाई। बिन गुर भवजल ना पार तराए। बिन गुर कोई ना दुखीआं दे दुःख गवाए। बिन गुर कोई ना हउमे दी मैल गवाए। बिन गुर कोई ना सिख दी पैज रखवाए। बिन गुर कोई ना कलिजुग आण तरए। बिन गुर कोई ना आण भेत खुल्ह़ाए। बिन गुर कोई ना जोत जगाए। बिन गुर कोई ना सच मार्ग पाए। बिन गुर कोई ना ज्ञान नाम दिवाए। बिन गुर कोई ना सोझी पाए। बिन गुर कोए ना गुर ज्ञान गोझ बताए। बिन गुर कोए ना विच्चों प्रभ दरसाए। बिन गुर कोई ना जीव दा भेत खुल्ह़ाए। बिन गुर कोए ना सिख को माण दिवाए। बिन गुर कोई ना भाणा सच वरताए। बिन गुर कोई ना जीव दी बणत बणाए। बिन गुर कोई ना भुलयां लै तराए। बिन गुर कोई ना जीव दी पैज रखवाए। बिन गुर कोई ना अज्ञान अन्धेर गवाए। बिन गुर कोई ना संसा रोग गवाए। बिन गुर कोई ना भाण्डा भरम भुलाए। बिन गुर कोई ना आपणी जोत जगाए। बिन गुर कोई ना पंजवीं जेठ मनाए। बिन गुर कोए ना आपणी जोत आपणे विच्च समाए। बिन गुर कोई ना सिख को माण दिवाए। बिन गुर कोई ना भरम चुकाए। बिन गुर कोई ना कलिजुग सोझी पाए। बिन गुर कोई ना रसना हरि गुण गाए। बिन गुर कोई ना गुर का शब्द अलाए। बिन गुर कोई ना मंगलाचार कराए। बिन गुर कोई ना कलिजुग पार लंघाए। महाराज शेर सिँघ सिर दे के हत्थ, सिखां दी लाज रखवाए। (४ जेठ २००७ बि)

मानस जन्म जगत में पाया। बिन गुर पूरे किसे पार ना लाया। मोह ममता विच्च फिरे लुभाया। दुनयावी झंजटां विच्च फसाया। दुःखां कलेशां डेरा लाया। देह रोगी विच्च रोग वधाया। होवे कष्ट अपार बिन गुर कोए ना दे छुडाया । (४ जेठ २००७ बि)

तारनहार आप समराथा। आपे राखे दे कर हाथा। सोहँ शब्द चलावे साची गाथा। बिन गुर पूरे ना कोई टिकावे माथा। बिन गुर पूरे ना कोई चढ़ाए साचे राथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग अकथ्थना अकाथा। (१ माघ २००६ बि)

सच दुआरा सोभनीक, हरि साचे आप सुहाया। बिन परमात्मा ना कोई प्रीत, दूजा इष्ट ना कोई मनाया। बिन सतिगुर ना कोई रीत, दूजा राह ना कोई चलाईआ। बिन गुरचरन ना कोई मन्दर मसीत, गुरूदुआर नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाया।

बिन मिल्या ना होवे सात, सांतक सति कोई वरताईआ। बिन प्रकाश ना मिटे रात, अन्त अन्धेर ना कोई गवाईआ। बिन सतिगुर ना देवे कोई दात, नाम वस्त ना कोई वरताईआ। बिन गुरमुख उतरे ना कोई घाट, लक्ख चुरासी मंझधार रुड़ाईआ। बिन गुर शब्द ना कोई साक, जगत सज्जण ना कोई बणाईआ। बिन किरपा गुर ना खुले ताक, बन्द किवाड़ ना कोई खुलाईआ। बिन नेत्र नज़र ना आए हाट, गुर सतिगुर पूरा रिहा वखाईआ। कलिजुग चोला रिहा पाट, कन्नी कन्नी कतराईआ। धरत मात खुशी होए मेरी अन्त मुक्के वाट, कन्ढी मिल्या सच्चा माहीआ। मेरी सुफ़ल करे ज़ात, आपणी ज़ात नाल मिलाईआ। मेरी फिर होवे प्रभात, सतिजुग साचा लए अंगढ़ाईआ। मैं भगतां कोलों सुणां गाथ, सोहँ ढोला चाईं चाईंआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्नां रक्खया साथ, निउँ निउँ लागाँ पाईंआ। (१६ माघ २०१८ बि)

संगत अंदर हरि का वासा, बिन संगत हरि जू कम्म किसे ना आईआ। संगत उत्ते गुर भरवासा, बिन गुर संगत ना कोई बणाईआ। बिन संगत गुरू रहे निरासा, गुर गुर कह कह सिफ्त ना कोई सालाहीआ। दोहां अंदर खेल करे पुरख अबिनाशा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाईआ। आदि अन्त पुरख अकाल इक्को गुरू जुग जुग वेखे तमाशा, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। नानक गोबिन्द दस जोती पाई साची रासा, मण्डल मंडप इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, हरि संगत बणाए साची बणतर, नाम जणाए इक्को मंत्र, लेखा जाणे गगन गगनंतर, सर्ब जीआं घट जाणे अन्तर, बिन अन्तर सतिगुर रूप ना कोई अखवाईआ।

संगत वड्डी गुर वड्डिआए, बिन गुर संगत कहण कोई ना पाईआ । नाम रंगत गुर चढ़ाए, बिन गुर रंग ना कोई वखाईआ। नाम मरदंगा गुर वजाए, बिन गुर अनहद राग ना कोई सुणाईआ। संगत संग गुर बणाए, बिन गुर संगी नज़र कोई ना आईआ। हरि संगत सतिगुर चन्द चढ़ाए, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। आदि जुगादी लिखया लेखा ना कोई खण्डत कराए, अखण्ड इक्को रूप रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद संगत रिहा वडयाईआ।

सतिगुर रूप भिन्न भिन्न, आदि जुगादि कराइंदा। गुरमुख विरला जाणे सच्चा चिन्ह, जिस आपणा निरगुण चिन्ह चक्कर वखाइंदा। कोटन कोट रूप वटाए गिण गिण, धरू प्रहिलाद कवण रूप धराइंदा। पुरख अकाल वेस वटाए छिन्न छिन्न, छिन्न भंगर आपणा खेल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा रूप इक्क समझाइंदा।

गुर का रूप आदि जुगादि इक्क, निरगुण नूर रुशनाईआ। बाहरों पंज तत्त चोला रिहा दिस, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई वडयाईआ । अन्तर आत्मा दर्शन पाया जिस, बाहर

वेखण कोई ना जाईआ । जगत लबास कलिजुग वन्डया हिस, हिसा शहनशाही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि गुरदेव इक्को रंग वखाईआ। (१२ अस्सू २०१६ बि)

लेखा मुकणा दीन दुनी दे पंखडीआं, बिना प्रभू दे भगतां अन्तम रहण कोई ना पाईआ। सतिगुर दे भुल्लयां सभ दीआं वढीआं जाणीआं कन्ह्वीआं, कन्ह्वा घाट हत्थ कोई ना आईआ। बिन सतिगुर शब्द तों विछड़ीआं रूहां नहीं जाणीआं गंढीआं, आत्म परमात्म मेल ना कोई मिलाईआ। बिना सतिगुर गोबिन्द तों चुक्कणा नहीं किसे आपणे कंधीआ, दीन दुनी दा भार ना कोई वंडाईआ। (१५ फग्गण श सं ११)

डूंघा सागर कलिजुग भवर, कूड़ कुड़िआरा घुंमण घेर रिहा वखाईआ । माणस जन्म ना जाए सवर, बिन सतिगुर ना कोई सहाईआ। जगत नाता मड़ी कवर, गोर घोर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे आप जगाईआ।
हरिजन जाग वक्त सुहेला, हरि सतिगुर मेल मिलाया। समरथ सुहाया साचा वेला, घर सुहञ्जणा सोभा पाया। करे खेल इक्क इकेला, कल धारी रूप वटाया। दुःख दलिद्दर कटे धर्म राए दी जेला, जीवण मुकत आप वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बूंद रकत रकत बूंद लेखे लेखा लवे लगाया। (२० जेठ २०१८ बि)

अद्धे मंगण शब्द घनघोर, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। अद्धे रातीं उठ उठ फिरदे चोर, लुट्ट लुट्ट जीवां रहे सताईआ। अद्धे चढ़दे नाम घोड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। अद्धे आपणा आप रहे रोड़, विषे विकारा वक्त गवाईआ। सतिगुर पूरे दी सदा लोड़, बिन सतिगुर पार ना कोई कराईआ । निरगुण सरगुण तेरी आपणे हत्थ रक्खी डोर, जिध्धर चाहे रिहा भवाईआ। गुर अवतारां आपणे हुक्मे देवे तोर, अन्तम आपणे विच्च लए मिलाईआ। बिन बूझे जीव पावे शोर, समझ समझ विच्च ना आईआ। अद्धे मंगदे कुछ होर, अद्धे मंगदे कुछ होर, देवणहारे घर कोई ना थोड़, जो मंगे सो वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख मनमुख मनमुख गुरमुख दोवें राह चलाईआ। (२७ असू २०१८ बि)

पंज तत्त करे विचार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश ध्यान लगाईआ । चारों कुण्ट तपे अंगिआर, दह दिशा एका अगन वखाईआ। हर घट होया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आपणा बल जणाईआ। आसा तृसना करे प्यार, हउम हंगता संग निभाईआ। माया ममता विच्च संसार, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। कूड़ी क्रिया जगत शंगार, नाम नेत्र कज्जल ना पाईआ। साची सेजा मिले ना कन्त भतार, लक्ख चुरासी भोग बलास कराईआ। इक्को भुल्लया हरि करतार, पंज तत्त रोवे दए दुहाईआ। मन मत बुध ना सके कुछ विचार, ना कोई चले अन्त चतुराईआ। बिन सतिगुर किरपा कोई ना उतरे पार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। (१६ अस्सू २०१६ बि)

जिस गुरमुख सतिगुर गुर शब्द मिले प्यारा, प्रेम प्रीती इक्क सिखाइंदा। दो जहानां करे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा रंग वखाइंदा। महल्ल अट्टल चढ़ बोले सच जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दूजा अवर ना कोई दवारा, दर्दी होर नज़र कोई ना आइंदा। बिन भगवान भगत रहे कवारा, बिन सतिगुर गुरसिख ना कोई परनाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत कलिजुग माया किसे कम्म ना आए शंगारा, कूड़ी क्रिया सर्ब वखाइंदा। जिस जन पारब्रह्म प्रभ पुरख प्रीतम मिले विच्च संसारा, सो सोभावन्त सुहागण नार जगत जवानी जोबण माणे मुटिआरा, दो जहानां एथे ओथे साचा सुख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी देवे साचा वर, गुरमुख मिले इक्को घर, घर मन्दर आप सुहाइंदा।(१६ अस्सू २०१६ बि)

ब्रह्म : कोट ब्रह्मण्ड कोई थिर ना रहावे। शब्द बाण गुर ऐसा लावे। चक्कर सुदर्शन दरस दिखावे। चार वरन दा भेद मुकावे। ब्रह्म से उपजे ब्रह्म माहि समावे। ईशर जोत हरि जीव में आवे। सर्ब सृष्ट प्रभ एक बणावे। नीच ऊँच सभ इक्क करावे। आपणा नाम एह बतावे। सोहँ शब्द घर साचे गावे। आवण जाण दा जीव पन्ध मुकावे। धरत धवल आकाश सभ थाईं समावे। जहां देखां तहां नदरी आवे। (८ फग्गण २००६ बि)
ईशर ब्रह्म जीव ब्रह्म रूप उपाया। (५ चेत २००७ बि)

ब्रह्म सरूप : पाए ब्रह्म होए ब्रह्म सरूप। (२० मध्घर २००६ बि)
ब्रह्म उपजया ब्रह्म समाया। ब्रह्म सरूप दा किसे भेत ना पाया। (२६ पोह २००६ बि)
जीव जुगत प्रभ आप बणावे। निज घर बैठा ताड़ी लावे। आप एक अनेक समावे। पारब्रह्म ब्रह्म सरूप उपावे। ब्रह्म सरूप सभ जीव उपावे। काया आकार छल रूप बणावे। अनन्द बिनोद विच्च जोत जगावे। बिन गुर बूझे कोई भेव ना पावे। सो बूझे जिस दया कमावे। साध संगत मिल हरि गुण गावे। (३ विसाख २००७ बि)
गुरप्रसादि ब्रह्म सरूप हो जाईए। (१६ विसाख २००७ बि)
ईशर जोत जगत में आए, आप ब्रह्म सरूप सिख ब्रह्म सरूप बणाइओ। (२४ विसाख २००७ बि)
महाराज शेर सिँघ लै अवतार, गुरसिखां ब्रह्म सरूप दरस दीदारया । (१२ कत्तक २००७ बि)

ब्रह्म ज्ञान : एह दिता सिखां नूं दान। सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम शब्द दा दित्ता ज्ञान। (८ फग्गण २००६ बि)
उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर दर्शन पाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर चरनीं लाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर मंगल गाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर झूल झुलाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां गुर सिख बणाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां सोहँ शब्द सुणाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां सति सन्तोख दिवाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां भरम भउ गवाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां कल दर्शन पाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जो जन सेव कमाया। उपजे ब्रह्म ज्ञान, जिन्हां महाराज शेर सिँघ रिदे ध्आया। (१७ वसाख २००६ बि)

ब्रह्म ज्ञान हरि चरन ध्यान। (११ मध्घर २०१० बि)
एह दिता सिखां नूं दान। सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम शब्द दा दित्ता ज्ञान। (८ फग्गण २००६ बि)
निहकलंक लै अवतार, सोहँ देवे ब्रह्म ज्ञानो। (२७ अस्सू २००७ बि)

भव सागर : गुरचरन लाग भव सागर तरीए, गरभवास गुर बंध कटाया । (२२ जेठ २००७ बि)
भव सागर तों होया पार। जन्म ना पावे दूजी वार। (१ माघ २००८ बि)
हरि शब्द अलख निरञ्जण, इक्क अलख जगाईआ। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। गुरमुख नेत्र पाए नाम अंजन, आपणा लोचण आप खुल्ह़ाईआ। मनमुख जीव जगत विकारा पी पी रज्जण, तृसना भुक्ख वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणी कल रिहा वरताईआ। (६ फग्गण २०१४ बि)

भगत : पैहला भगत भगत प्रहिलाद, परलो नेड़ कदे ना आईआ। दूजे धरू दिती दाद, नानक दादक ना कोई वडयाईआ । तीजे बल दित्ता साथ, सगला संग निभाईआ। चौथे अमरीक रक्खया हाथ, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। पंजवें जनक लेखा इकांत, अकल कला समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन भगवन संग रखाईआ।
छेवें हरी चन्द उजिआर, सतवें तारा राणी यार, अठवें बिदर करे सुधार, नावें सुदामा जाए तार, दसवें दरोपद करे विचार, यारवें जै देव लाए पार, बारवें रविदास बणाए यार, तेरवें सैण लए उठाल, चौधवें कबीर करे प्रितपाल, पंदरवें धन्ना जट्ट दए वखाल, सोलवें तरलोचण शाह बणाए कंगाल, सतारवें अजामल देवे ठार, अठारवें बैणी गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गनका पूतना बद्धक जगत खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ दस दस अठ्ठ नव्व नव्व जुग जुग सति सति एका तत्त वखाईआ। (२१ मध्घर २०१८ बि)

भगत जन सो, जो दरस सुहंदे। भगत जन सो, जो कल तरंदे। भगत जन सो, जो कर दरस सरन पड़ंदे। भगत जन सो, जिस बख्शे जन आप बख़शिंदे। भगत जन सो, मिल साध संगत जन दुतर तरंदे। भगत जन सो, जिन पाया मुरार मनोहर मुकन्दे। भगत जन सो, आत्म रस निझरों झिरंदे। भगत जन सो, कँवल नाभ अमृत बूंद मुख चुविंदे। भगत जन सो, जिन प्रभ दसम दवार खुल्हिंदे। भगत जन सो, जो कलिजुग साध संगत मिल बहन्दे। भगत जन सो, जो निहकलंक दरस करिंदे। भगत जन सो, जिन महाराज शेर सिँघ प्रभ गोबिन्दे। (२ वसाख २००८ बि)

धन्न वड्डिआई भगत जन, हरि सज्जण मेल मिलाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, हरि सतिगुर

सच्चा पाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, जग आपणा पन्ध मुकाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, लोकमात साचा चन्द चढ़ाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, गृह मन्दर इक्क सुहाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, पतिपरमेश्वर इक्को गाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल खलाया।

धन्न वड्डिआई भगत जन, घर पाया इक्क दवार। धन्न वड्डिआई भगत जन, रसना गाया इक्क निरँकार। धन्न वड्डिआई भगत जन, नाता तोड़या सर्ब संसार। धन्न वड्डिआई भगत जन, गृह मिल्या पुरख करतार। धन्न वड्डिआई भगत जन, सो पुरख निरञ्जण करे सच प्यार। धन्न वड्डिआई भगत जन, भाण्डा भरम भउ भन्नाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, मन चाओ घनेरा हरि जू दर्शन पाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, जुग जुग दा गेड़ा अन्त कटाया। धन्न वड्डिआई भगत जन, तेरा मेरा मोह चुकाया । धन्न वड्डिआई भगत जन, हरि नेरन नेरा नज़री आया। धन्न वड्डिआई भगत जन, दो जहानां डेरा ढाहिआ। धन्न वड्डिआई भगत जन, आपणा बेड़ा बंन चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल कराया।

धन्न वड्डिआई भगत जन, घर पाया श्री भगवान। धन्न वड्डिआई भगत जन, लोकमात मिल्या माण। धन्न वड्डिआई भगत जन, हरि का नाउँ सुणया कान। धन्न वड्डिआई भगत जन, गृह मन्दर मिल्या सच मकान। धन्न वड्डिआई भगत जन, निरगुण सरगुण दर दर वेखे आण। धन्न वड्डिआई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड मेहरवान।

धन्न वड्डिआई जन भगत, भगती पन्ध मुकाया। धन्न वड्डिआई जन भगत, बूंद रकती लेखे लाया। धन्न वड्डिआई जन भगत, आत्म शक्ती परमात्म जोड़ जुड़ाया। धन्न वड्डिआई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी गोद बहाया।

धन्न वड्डिआई जन भगत, जागरत जोत होए उजिआर। धन्न वड्डिआई जन भगत, हउम रोग दए निवार। धन्न वड्डिआई जन भगत, धुर संजोग होया करतार। धन्न वड्डिआई जन भगत, अमृत पीआ ठंडा ठार, धन्न वड्डिआई जन भगत, भगत नाम सुणया सच्ची धुनकार। धन्न वड्डिआई जन भगत, कूड़ी क्रिया करे ख़वार। धन्न वड्डिआई जन भगत, आत्म दरसी देवे दरस दीदार। धन्न वड्डिआई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार।

धन्न वड्डिआई भगत जन, जणया पुरख अलक्ख। धन्न वड्डिआई भगत जन, हरि निरगुण रूप देखया प्रतक्ख। धन्न वड्डिआई भगत जन हरि जू पर्दा लिआ ढक। धन्न वड्डिआई भगत जन, निरगुण निरवैर आपणी गोदी लिआ चक। धन्न वड्डिआई भगत जन, सदा सदा सिर रक्खे हत्थ। धन्न वड्डिआई भगत जन, मिल्या मेल पुरख समरथ। धन्न वड्डिआई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे हिरदे गिआ वस।

धन्न वड्डिआई भगत जन, हरि पाया पुरख अबिनाश। धन्न वड्डिआई भगत जन, नाता तुटा पृथ्मी आकाश। धन्न वड्डिआई भगत जन, लेखे लग्गा पवण स्वास। धन्न वड्डिआई भगत जन, माणस जन्म होया रास। धन्न वड्डिआई भगत जन, जन्म जन्म दी पूरी होई आस।

धन्न वड्डिआई भगत जन, मेल मिलाया शाहो शाबाश। धन्न वड्डिआई भगत जन, निरगुण जोत करे प्रकाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे खेल तमाश। धन्न वड्डिआई जन भगत, घर पाया हरि गोबिन्द। धन्न वड्डिआई जन भगत, कलिजुग अन्तम मिटी चिन्द। धन्न वड्डिआई जन भगत, अमृत पीआ सागर सिंध। धन्न वड्डिआई जन भगत, माण गवाया सुरपत इन्द। धन्न वड्डिआई जन भगत, हरि मिल्या गुणी गहिंद । धन्न वड्डिआई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब बख्शंद।

धन्न वड्डिआई जन भगत, पाया हरि दवार । धन्न वड्डिआई जन भगत, विसरया संसार। धन्न वड्डिआई जन भगत, पुरख अबिनाशी लए उधार। धन्न वड्डिआई जन भगत, बन्द ख़लासी होई अन्तम वार। धन्न वड्डिआई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे साची कार। (२६ मध्घर २०१८ बि)

भगती : हरि का नाम इक्क जगत रखवाल है। प्रभ मिलण दी सिक वड भगती विच्च जहान है। गुरसिख साची सिख्या लैण सिख, इक्क ना भुल्ले हरि भगवान है। आत्म उतारे कलिजुग झूठी विक्ख, अमृत प्याए नाम निधान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी होया आप मेहरवान है। (१ मध्घर २०१० बि)

जगत भगती चरन ध्यान, एका एक रखाईआ। नाम शक्ती गुण निधान, साची सेव लगाईआ। बूंद रकती वेख वखाण, आदि शक्ती आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां बणत बणाईआ। (१८ हाढ़ २०१३ बि)

हरि चरन कँवल प्यार, भगती भगत उपाया। भगती रूप अपार, हरिजन इछया विच्च रखवाया। हरिजन इछया एका धार, हरि दर्शन नैणा पाया। हरि दर्शन अगम्म अपार, तामस तृष्ना दए मिटाया। साचा मेला इक्क दवार, एकँकारा मेल मिलाया।

विछड़ ना जाए दूजी वार, साची जुगती जुगत बणाया। भगत भगवन्ती साची धार, साचा कन्त रही हंढाया। दिवस रैण करे प्यार, आत्म सेजा इक्क विछाया। मंगे मंग दोवें भुजा पसार, चतरभुज मेल मिलाया । आपे देवे इक्क हुलार, गोझ आपणा आप खुल्लाया। भगवन्त भगती भगत एका रंग अपार, आपणा दए चढ़ाया। साची भगती विच्च संसार, हरि सरन सरनाई चरन कँवल कँवल चरन चित लाया। भगती हरि का रूप है, हरिजन विच्च समाए। दिस ना आए अन्धकूप है, सृष्ट सबाई रही बिललाए। ना कोई धुखाए साचा धूप है, हरि मन्दर अंदर धूंआंधार ना कोई दिसाए। आपे फिरदी चारे कूट है, गुरमुख सोए रही जगाए। शब्द पंघूड़ा रही झूट है, गोबिन्द साचा रिहा हिलाए। साची मस्तक जोत निरञ्जण पोह रही फूट है, अज्ञान अन्धेर मिटाए। जूठ झूठ फल रिहा टूट है, जिस जन आपणा राह वखाए। पंज चोर ना सकण लूट है, दर दवार दए दुरकाए। तीर निराला जाए छूट है, जन हिरदे पार कराए। अन्तम अन्त मनाए जो जन गए रूठ है, जुग जुग विछड़े मेल मिलाए। पुरख अबिनाशी जिस जन उप्पर जाए तूठ है, भगती भगतन सेवा लाए । भगत सुहेले एका मूठ है, एका दूजा संग निभाए। मनमुखां खाली ठूठ है, सच वस्त दिस ना आए। लोभ मोह विकारा नाता जगत झूठ है, निन्दक निन्दया विच्च रखाए। कलिजुग

काया रही कूठ है, साचा राह ना कोई दिसाए। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग आपणी जोत धर, भगतन वेखे साचा घर, साची भगती सेवा लाए। (१६ मध्घर २०१३ बि)

साची भगती भगत भगवान, जुग जुग आप समझाइंदा। चरन सरन सरन चरन हरि ध्यान, दूजा इष्ट ना कोई वखाइंदा। अन्तर आत्म आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर भगत भगवन्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल कराइंदा। (२१ रुाघ २०१८ बि)

पुरख अबिनाशी सदा समरथ, समरथ दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा मार्ग दस्स, भगत भगवन्त लए तराईआ। कलिजुग अन्तम महिमा जाणे अकथ्थना अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राईआ। निरगुण सरगुण होया वस, बेवस बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्त सच प्यार अंदर जाए फस, साची भगती इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। (२३ फग्गण २०१८ बि)

भगतां भगती प्रभ देवे भाउ, भगवन दया कमाईआ। प्रभ मिलण दा साचा चाउ, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। अबिनाशी करता एका गाओ, गुण अवगुण लेखे लाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाओ, ब्रह्म पारब्रह्म वडयाईआ। साचा मन्दर इक्क वसाओ, घर वज्जे तत्त वधाईआ। ढोला अगम्मी एका गाओ, गीत गोबिन्द अलाईआ। आपणा पर्दा आप उठाओ, मुख घुंगट रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा जणाईआ।

साची भगती आत्म रस, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण होए वस, सरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। इक्क इकेला मार्ग दस्स, गुर चेला मार्ग लाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर सज्जण फेरा पाइंदा। कर प्रकाश कोटन रव सस, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। नाम अगम्मी देवे वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा । लहणा देणा हत्थो हत्थ, साचा वणज आप कराइंदा। कूड़ी क्रिया देवे मथ, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जगत वसूरा जाए लथ्थ, दुखीआं दर्द दर्द वंडाइंदा। लेखा जाणे तत्त अठ, अठ्ठ अठोतरी आपणे विच्च समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक्क समझाइंदा।

साची भगती सतिगुर सरन, दूजी अवर ना कोई चतुराईआ। नेत्र खुल्ले हरन फरन, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। नाता तुटे जन्म मरन, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ । साहिब मिले करनी करन, करता पुरख होए सहाईआ। लहणा देणा चुके वरनी वरन, वरन गोत ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक्क समझाईआ। साची भगती सतिगुर एक, दूसर ओट ना कोई रखवाइंदा। निज नेत्र निज रूप लैणा पेख, भेव अभेद खुल्लाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई औलीआ पीर शेख़, पंडत पांधा सर्ब कुरलाइंदा। जन भगतां करे साचा हेत, नित नवित्त वेस वटाइंदा। वेखणहारा काया खेत, गृह मन्दर खोज खुजाइंदा। आप सुहाए सुहञ्जणी रुत्त बसन्ती चेत, चेतन्न आपणा पर्दा लाहिंदा। जिस जन खोल्ले सच्चा भेत, तिस आपणा नाउँ दृढ़ांइंदा। लक्ख चुरासी लए

वेख, गृह मन्दर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा।

भगती भाउ हरि गोबिन्द, गहर गम्भीर दए वडयाईआ। भगत भगवान दी साची बिन्द, सुत अनादी रूप वटाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जन्म कर्म दी मेटे चिन्द, चिन्ता रोग रहण ना पाईआ। अमृत धार वगाए सिंध, रस इक्को इक्क चवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक्क वडयाईआ।

साची भगती सतिगुरू दुआर, दर दरबारा इक्क वखाइंदा। जिस घर मिले सच प्यार, सो मन्दर सोभा पाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को वणज इक्क वपार, इक्को हट्ट चलाइंदा। इक्को वेखे वेखणहार, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौं चार जिस करया पार, सो साहिब आपणा वेस वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिख ना कोई जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा नेत्र नैण होए शरमशार, अक्ख प्रतक्ख ना कोई उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश मंगण हमेश, ख़ाली झोली सर्ब वखाइंदा। श्री भगवान नौजवान आदि जुगादी इक्क नरेश, नर नरायण तख़त निवासी दर घर साचे सोभा पाइंदा। भगत भगवान रसना जिह्वा बत्ती दन्द कहण, कह कह शुकर सर्ब मनाइंदा। सति सरूप शाहो भूप बिन रंग रूप चुकाए लहण देण, लेखा आपणे हत्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक्क जणाइंदा।

साची भगती साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। अनहद नाद वज्जे मरदंग, धुन अनादी नाद सुणाईआ। आत्म सेजा सच पलंघ, सुहञ्जणी रुत्त आप वडयाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर वेखे लंघ, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म लाए अंग, अंगीकार इक्क हो जाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे अनन्द, अनन्द मंगल इक्को गाईआ। ईश जीव गाए छन्द, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। नाता तुटे भेख पखण्ड, भाउ भगती इक्क जणाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, साची बन्दगी इक्को लाईआ। लेखा जाणे जीव पिण्ड, पंडत पांधा नज़र कोई ना आईआ। अमृत धार वहाए सागर सिंध, गहर गम्भीर दया कमाईआ। लेखा चुक्के सुरपत इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोई चतुराईआ। जिस मिल्या साहिब बख्शंद, बख्शिश इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां रिहा जणाईआ।

साची भगती हरि का संग, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जगत दुआरा वेखणा लंघ, सतिगुर इक्को नज़री आइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा। ना कोई जीउ ना कोई पिण्ड, ब्रह्मण्ड ना खोज खुजाइंदा। ना कोई सुरपत ना कोई इन्द, ब्रह्मा विष्न शिव ना रूप वखाइंदा। ना कोई पिता ना कोई बिन्द, जननी जन ना कोई सालाहिंदा। सच दुआर इक्को इक्क गुणी गहिंद, गहर गम्भीर आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां मार्ग इक्क वखाइंदा। (१६ माघ २०१६ बि)

साची भगती भगवन प्रीत, श्री भगवान आप बणाईआ। जिस दी करे ना कोई रीस, कोटन कोट ध्यान लगाईआ। हरि सरनाई जगत वासना लए जीत, सति सरूप समाईआ। मिट्ठा

करे काया कौड़ा रीठ, अमृत रस सच भराईआ। सदा सुहेला वसे चीत, सगला संग निभाईआ। लोकमात साची रीत, सो साहिब सतिगुर आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

साची भगती सतिगुर चरन प्यार, लोकमात इक्क जणाईआ। गुरमुख गुरसिख देवे आधार, सन्त सुहेले धीर धराईआ। भगत भगवान लए उठाल, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, साचा वणज आप कराईआ। लेखे लाए हरिजन घाल, करता कीमत आपे पाईआ। सच प्रीती जो जन रहे भाल, तिन्नां आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन इक्को बूझ बुझाईआ।

साची भगती सतिगुर हित्त, हितकारी इक्को नज़री आइंदा। लेख अलेखा दए लिख, लिखया लेख आप मिटाइंदा। अंदर वड़ के खोल्हे भेत, भेद अभेद चुकाइंदा। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र दरस दिखाइंदा। जगत माया ना लाए सेक, तत्त अगनी आप बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा।

साची भगती सतिगुर संग, हरि करता आप जणाइंदा। काया चोली चढ़े रंग, सति सरूप वखाइंदा। घर सुणाए आपणा छन्द, साचा राग अलाइंदा। अगला पिछला मेट पन्ध, ठांडे घर बहाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी भगती लाइंदा।

जिस जन भगती लाए आप भगवन, आपणी दया कमाईआ। तिस लेखा लिखे बोध अगाधा महिमा अगणत, पर्दा दूई द्वैत उठाईआ । माणस जन्म बणाए बणत, लक्ख चुरासी विच्चों दए वडयाईआ। नाउँ धराए हरि सज्जण सन्त, सन्त सतिगुर रूप वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणे राह चलाईआ।

भगती मार्ग दस्से आप, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। घर मिलावा हरि सतिगुर सज्जण साक, बाहर टोलण कोई ना जाईआ। गृह मन्दर खोल्हे बन्द किआड़ी ताक, पर्दा आपणा आप परे हटाईआ। साचा दे नाम निधान जाप, इशनान चरन धूढ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती देवे पाठ, पुस्तक हत्थ ना कोई फड़ाईआ। पुस्तक पाठ ना कोई किताब, अक्खर अक्खर ना कोई समझाईआ। हरिभगत अंदरे अंदर कराए आपणा जाप, बिन रसना जिह्वा राग अलाईआ। आत्म परमात्म सुणाए आख, धुर संदेशा इक्क जणाईआ। पत्तण वेख प्रभ बैठा घाट, बण खेवट खेट मलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। जन भगत भगती रंग रता, रती रत रत सुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर पूरे टेको इक्को मथ्था, दूजे सीस ना किसे निवाईआ। जगत विकार करे हत्ता, हत्या बिन छुरी कटार हलाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन लेखा लेखे विच्चों समझाईआ।

भगती लेखा अगम्म अथाह, बिन सतिगुर हत्थ किसे ना आइंदा। लभ्भ लभ्भ थक्के जंगल जूह उजाड़ पहाड़ थल अस्गाह, समुंद सागर खोज खुजाईआ। अग्गे हो कोई ना पकड़े बांह, बाहों पकड़ पार ना कोई कराईआ। दूर दुराडे सारे करन ना, सगला संग ना कोई निभाईआ। नाता तुटे पुतरां मां, पिता पूत गोद ना कोई उठाईआ। पुरख अकाल दीन

दयाल सतिगुर पूरा जन भगतां इक्को करे हां, आप आपणे अंग लगाईआ। सच वसाए धुर मकान, सचखण्ड दवारा इक्क सुहाईआ। साची भगती प्रभ चरन ध्यान, सच ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। कलिजुग अन्त हो मेहरवान, मुहब्बत इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां देवे सच प्रीती भगती दान, भगवन आपणे दर रखवाईआ। (१७ मध्घर २०२० बि)

गुर का ज्ञान जो गुरमुख पढ़दा, भगती सच कमाईआ। पौड़े पौड़े आपणे चढ़दा, पिछला पन्ध चुकाईआ। सुखमण टेडी बंक कदे ना अड़दा, ईड़ा पिंगल नैण शरमाईआ। सच सरवोर साचे तरदा, धुर दी तारी लाईआ। बजर कपाटी पड़दा सड़दा, दुई द्वैती परे हटाईआ। आपणे घर विच्च अपे वड़दा, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। दीपक जोती इक्को जगदा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। पलंघ रंगीला साचा सच दा, पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। साहिब सतिगुर बाहों फड़दा, बिन हत्थां लए उठाईआ। हरिजन आपणी गोदी धरदा, फड़ बाहों गले लगाईआ। लेखा दस्से फेर अगले घर दा, दसम दवारी पार कराईआ। सुन अगम्म चरनां हेठ रक्खदा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। कुण्डा लाह के थिर घर दा, साचा मन्दर दए सुहाईआ। मेल मिलाए आपणे पिर दा, प्रीतम वखाए चाईं चाईंआ। जिस नालों विछड़यां चिर दा, जुग चौकड़ी काल विहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द ज्ञान नाल मिलाईआ। (२० जेठ २०२१ बि)

रल मिल भगत भगवान इक्क दूजे दा सोहला लउ गा, तूं मेरा मैं तेरा चाईं चाईंआ। तुसीं मेरे मैनूं आपणा लउ बणा, एहो तुहाढ्ढी भगती नज़री आईआ। (२२ फग्गण २०२१ बि)

प्रेम सिँघ कहे गुरमुखो करयो ना कोई उदासी, चिन्ता ना कोई बणाईआ। मैनूं जन भगत सारे मिल गए साथी, सचखण्ड बैठे डेरा लाईआ। इक्कीआं विच्चों मैनूं पैहलों मिली थापी, सेवा मेरी आपणे लेखे पाईआ। अग्गे गुरमुख वीह रहिंदे बाकी, जे नां दस्सां शायद डर के सारे बेनन्ती देण सुणाईआ। मैं चौहन्दा उह छड्ड जगत वाली हयाती, सचखण्ड आवण चाईं चाईंआ। जिथ्थे इक्को जोत नूर प्रकाशी, अन्ध अन्धेर रिहा ना राईआ। गृह मन्दर बह के आपणे खाटी, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। मैं संदेशा देवां सच संदेश पाती, पत्रका इक्क सुणाईआ। जन भगतो साहिब सतिगुर दी सदा मंनयो आखी, इस तों वड्डी भगती नज़र कोई ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता धुर दा वर, मेरा लहणा देणा लेखा सभ तों पैहलां मेरी झोली पाईआ। (१४ जेठ श सं ५)

भगती कहे मैं दस्सां सच सलाह, जन भगतो इक्क जणाईआ। मैं चार जुग दा पिछला तक्कया राह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग राह तकाईआ। अवतार पैगम्बर गुरूआं दे तक्के नां, जो रागाँ नादां विच्च गाईआ। मैं फिरी थाउँ थां, थान थनंतर भज्जी वाहो दाहीआ । बिनां प्रभू किरपा तों किसे दी पकड़े कोई ना बांह, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। कलिजुग अन्तम वेखे सभ दी बुद्धि होई कां, काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

भगती कहे जन भगतो कलिजुग अन्तम जागो, आलस निंदरा दिउ गवाईआ। पुरख अकाल दी सरनी लागो, जो सभ दा पिता माईआ। दुरमत मैल धोवो दाग़ो, पत्तत पुनीत आपणा आप लैणा कराईआ। गृह मन्दर जगाओ चरागो, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। झगढ़ा मेटो झगढ़े वाले समाजो, समिगरी आपणी लैणी बदलाईआ। अन्त सहाई होए ना कोई पुरख अकाल बाझों, बाजां वाला गोबिन्द दे के गिआ गवाहीआ। इक्को साहिब स्वामी अराधो, जो हर घट वस्सया सोभा पाईआ। आपणा आप सतिगुर किरपा साधो, साधना सच लैणी अपणाईआ। धुर दा मालक अगम्मा माधो, माधव इक्क अखवाईआ। जिस दा प्यार सच वैरागो, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। ममता मोह विकार त्यागो, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा रंग इक्क रंगाईआ।

भगती कहे जन भगतो खोल्हो अक्ख, निझ नैण नैण रुशनाईआ। हरि रूप अनूप तक्को प्रतक्ख, जो पारब्रह्म इक्क अखवाईआ। लहणा देणा जुग चौकड़ी जिस दे हत्थ, धुर दा करता वड वडयाईआ। सर्ब कला समरथ, देवणहार नूर अलाहीआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र गाउँदे यस, नाम कलमे सिफ्त सलाहीआ। उह अमृत आत्म देवणहारा रस, रस्ता आपणा दए विखाईआ। आत्म परमात्म रहण ना देवे वक्ख, विछोड़ा जगत वाला कटाईआ। मानस जन्म खेड़ा होए ना भट्ठ, अग्गनी अग्ग ना कोई तपाईआ। मेहरवान हो के लेखा मुकाए तीर्थ अठ्ठ सट्ठ, अमृत सरोवर आप नुहाईआ। पल्ले बंन्हे इक्को नाम गट्ठ, जिस नूं दो जहान ना कोई खुल्हाईआ। जो दो जहान चलावणहारा रथ, रथ रथवाही इक्क अखवाईआ। उह देवणहार अगम्मी वथ, नाम अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। तिस साहिब दी सरन सरनाई जाणा ढठ्ठ, जेहड़ा ढट्ठयां लए उठाईआ। जन्म कर्म दा लेखा देवे कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि खेल खिलाए सच, सच दा मालक आपणी दया कमाईआ। (२ अस्सू शहनशाही सम्मत अठ)

भाग : वडभागी वड होया भाग, भगवन भाग इक्क वंडाइंदा। वडभागी वडभाग गए जाग, हरि करता जाग खुल्हाइंदा। वडभागी वडभाग मिल्या दाज, हरि भागी झोली आप टिकाइंदा। वडभागी वडभाग मिल्या इक्क स्वाद, सति सतिवाद हरि जू आपणा नाम वखाइंदा। वडभागी वडभाग होया लोकमात, पुरख अबिनाश दया कमाइंदा। जन भगतां दस्स आपणी ज़ात, जगत वफ़ात डेरा ढाहिंदा। जन्म कर्म दे बदल हालात, हासल आपणा अंक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वंडणहारा साचा भाग, जगावणहारा सच चिराग़ बुझावणहारा जगत आग, उपजावणहारा प्रेम वैराग, धवावणहारा दुरमत दाग़, उडावणहारा हँस काग, मिलावणहारा कन्त सुहाग, चढ़ावणहारा अगम्म जहाज़, बख्शणहारा चरन प्रीती सच्चा राज, बणावणहारा निरगुण सरगुण समाज, चुकावणहारा लेखा आदि जुगादि, दरसावणहारा डेरा पारब्रह्म ब्रह्माद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर सच्चा इक्क सुहाईआ।

भाग होया दर मिल्या सोहणा, सोहणी नगरी नज़री आईआ। जिथ्थे ना हस्सणा ना रोणा,

खुशी ग़मी ना कोई जणाईआ। ना निंदरा ना सौणा, जागरत वंड ना कोई वखाईआ। ना रसना ना गौणा, धुन आवाज़ ना कोई शनवाईआ। ना घड़ौणा ना ढौणा, बणावण वाला रूप ना कोई वखाईआ। सच दवारा इक्को सोभा पौणा, जिस गृह बह के गुरमुख खुशी मनाईआ। दीपक दीआ इक्को नज़री औणा, निरवैर नूर रुशनाईआ। सो हिस्सा जन भगतां झोली पौणा, भाग विच्चों भाग धुर दी वंड वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सरनाईआ।

वन्डया हिस्सा पुरख अगम्म, भागाँ भरया झोली पाईआ। जिस दी कीमत ना कोई दम, दमड़ी मुल्ल ना कोई रखवाईआ। किरपा कर श्री भगवन, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। लेख चुकाए छप्पर छन्न, साचा मन्दर दए सुहाईआ। जो गुरमुख गिआ मन्न, तिन्नां मनसा पूर कराईआ। लोकमात चाढ़ के चन्न, सचखण्ड करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल होए सहाईआ।

भाग कहे मैं भागाँ भरया, भरमीआं हत्थ कदे ना आइंदा। गुरमुख विरले फड़या लड़या, सच प्रीती इक्क जुड़ाइंदा। जिस ने अक्खर धुर दा पढ़या, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। मैं हत्थ ना आवां पाणी ठरयां, अगनी तत्त सड़यां अग्ग ना कोई लगाइंदा। मैं नज़र ना आवां मन्दर वड़या, गुरूदवार फड़ बाहों कोल ना कोई बहाइंदा। मैं लभ्भ ना सकां पर्बत चोटी चड़यां, डूंघे सागर पल्लू ना कोई बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा हिस्सा आपणे हिस्से इक्क रखवाइंदा।

भाग कहे मैं हिस्सेदार, सांझी धुर दा नज़री आईआ। जन भगतां नाल मेरा विहार, बिवहारी हो के संग निभाईआ। जिस वेले जुग चौकड़ी बीते विच्च संसार, कलिजुग अन्तम वेला आईआ। किरपा करे आप निरँकार, निरगुण होए सहाईआ। जोती जाता हो उजिआर, स्वच्छ सरूप रूप वटाईआ। मैनूं लै के आवे नाल, आपणी उंगली लाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप विच्चों दए वखाल, गुरमुख सज्जण भाईआ। हरिजन बणाए साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहणा दए वखाईआ। भाग कहे मेरा हिस्सा अद्ध, अद्धविचकार वेख वखाइंदा। मेरी नौ दवारिउँ पार हद्द, हदूद इक्को इक्क वडिआइंदा। जिथ्थे वज्जे अगम्मी नद, तार सितार ना कोई हिलाइंदा। जिथ्थे ना कोई सूरज चन्द, जोती नूर डगमगाइंदा। जिथ्थे ना कोई गीत छन्द, रसना जिह्वा ना सिफ्त सालाहिंदा। जिथ्थे कोई ना सके लंघ, सच सिँघासण सोभा कोई ना पाइंदा। साहिब सतिगुर बैठा आप बख्शंद, बख्शिश आपणे हत्थ रखवाइंदा। ओथे जन भगतां मेरा हिस्सा देवे वंड, भाग अभागी आपणे घर बणाइंदा। सति बख्श के अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सोहणी बणत बणाइंदा। भाग कहे मैं भगतां जोगा, जुगती प्रभ ने आप बणाईआ। मैं हत्थ ना आवां लोकां, लभ्भण विच्च लोकाईआ। मैं सच दवारे दे के होका, आपणी सेव कमाईआ। जिस वेले प्रभू जन भगतां अंदर जगावण लग्गे जोता, अग्गे हो के सीस निवाईआ। एहो सुहञ्जणा मेरा मौका, हरिजन मिल के आपणा मेल मिलाईआ। काया मन्दर अंदर वेख सोहणा कोठा, सच सिँघासण वेख खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे बेपरवाहीआ।

भाग कहे मैं सुणावां की, कहण विच्च कुछ ना आईआ। जिस वेले प्रभू जन भगतां करे निर्मल जी, जीवण जुगत दए समझाईआ । ओसे वेले चरन कँवलां जावां थी, आपणा आप मिटाईआ। घर वेख्या साढ्ढे तिन्न हत्थ सीं, बंक दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

भाग कहे जिस वेले प्रभ करे मेहर, मेहर नज़र उठाइंदा। भगत भगवान लए घेर, घेरा शब्दी इक्क जणाइंदा। पिछला लहणा दए नबेड़, अगला पन्ध मुकाइंदा। भाग लावे काया खेड़, खिड़की कुण्डा आप खुल्ह़ाइंदा। ओस वेले मैं चरन कँवलां आवां नेड़, नेरन हो के सीस निवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा धुर दा संग रखाइंदा।

भाग कहे मैं नेत्र खोल्ह़ां, बिन अक्खां अक्ख खुल्ह़ाईआ। बौहड़ी बौहड़ी कर के बोलां, दरोही दरोही नूर खुदाईआ। साचा राग गावां इक्को सोहला, तूं मेहरवान मेरा सच्चा माहीआ। जन भगतां नाल बणां विचोला, मेरा मेला देणा मिलाईआ। अंदर रहे ना पड़दा उहला, सज्जण साख्यात नज़री आईआ। जिस वेले जन भगत तेरा सोहँ गावण ढोला, मैं सुण सुण खुशी मनाईआ। मैं वसां सदा काया चोला, चोली तेरा रंग वेख वखाईआ। दर दरवेश बणां गोला, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत दिती समझाईआ।

भाग कहे मेरी वंड अव्वली, अव्वल अल्ला आप कराइंदा। मैं होका देवां गलीओ गली, लक्ख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। परम पुरख आदि जुगादी वली छली, वल छल धारी हत्थ किसे ना आइंदा। जोधा सूरबीर वड्डा बली, बल बावन खेल खिलाइंदा। जिस ने लेखे लाए ईसा मूसा मुहम्मद अली, अल्ला हू नूर आप अखवाइंदा । जिस दे पिच्छेगोबिन्द सीस रक्खया तली, दो जहानां नैण उठाइंदा । जिस दी चरन धूढ़ आदि जुगादि भगतां मंगी, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। जिस दी खेल साचे सन्तां लग्गे चंगी, हरिजन चंगी तरा समझाइंदा। जो गुरमुखां कूड़ी क्रिया कटे तंगी, तंग दस्त ना कोई वखाइंदा। जो गुरसिखां लावे अंगी, अंगीकार आप हो जाइंदा । अंदरों वासना कढ्ढे मंदी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। साची देवे नाम सुगंधी सोहणा रूप वखाइंदा। मार्ग दस्सके धुर दी डण्डी, रहबर इशारे नाल समझाइंदा। पन्ध मुका के खण्ड ब्रह्मण्डी, ब्रह्मांड डेरा ढाइंदा। जिस वेले जन भगतां सुनावे आपणा सोहँ छन्दी, एहो भाग जो गुरमुखां झोली पाइंदा। एहो जेही वंड कदे ना वंडी, जो सिध्धा जन भगतां झोली आप भराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ तों उत्तम श्रेष्ट रीती एहो लग्गी चंगी, आपणी मेहर नाल पार कराइंदा। (२३ हाढ़ २०२१ बि)

भख भोज : भोग लग्गे भोज बण जाए। बिन भोगों भख अखवाए। लेहज़ फेहज़ इक्क संग रलाए। चार नाम भोजन अखवाए। भोग लगाओ होवेगा आदर । महाराज शेर सिँघ सदा जे हाज़र। (१२ भादरों २००६ बि)

जिस नूं ईशर भोग लगावे। भख तों भोजण बण जावे। (१७ भादरं २००६ बि)

भोजन सो जिस प्रभ भोग लगाए। प्रगट जोत गुरसिख घर आए। भगत जनां प्रभ संग रलाए। कलिजुग जन्म बहत्तर जन भगत प्रगटाए। किरपा कर प्रभ धरनी धर, रसना

भोग भंडार लगाए। बिन भोग प्रभ भोजा भक्ख हो जाए। गीता वाक कृष्न सच हो जाए। लेहज़ फेहज़ ना संग रलाए। शूद्र वैश रंग इक्क रंगाए। गुरसिख बणत कलिजुग बणाए। प्रगट कर प्रभ ठाकर सिँघ जस गाए। महाराज शेर सिँघ अन्त होए सहाए। (२६ चेत २००८ बि)

भोग लगाए विष्नूं भगवान। साचा होया जगत परवान। भख भोज लेहज फेहज चारों इक्क समान। झूठा जगत ना जाणे भेव बली बलवान। कलिजुग जामा धार, महाराज शेर सिँघ देवे दरस गुणी निधान। (१७ सावण २००८ बि)

सच्चा मार्ग आत्म परमात्म देवे दस्स, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। आपणे वेखण दी जिस जन देवे अक्ख, अक्खर निशअक्खर दए समझाईआ । बाहरों किसे ना आवे हत्थ, लभ्भदी फिरे जगत लोकाईआ। जिस जन देवे धीरज यत, सति सन्तोख इक्क वखाईआ। तिस शांती शांत रूप हो के अंदर जाए वस, वासता आपणे नाल रखाईआ। सो गुरमुख गुरसिख नौं दुआरे कोई ना खावे भख, भोजन इक्को नाम नज़री आईआ। अंदर बाहर रसना जिह्वा बत्ती दन्द कहे प्रभू तेरा नाम सति, कूड़ी दिसे सृष्ट सबाईआ। धन्न भाग जिन्नां शांती नाल शांत हो के आपणी पत्त लई रक्ख, तिन्नां पतिपरमेश्वर मिल्या बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां देवणहारा हक़, हक हकीकत झोली पाईआ। गुरसिख मंज़ल चढ़दा कदी ना जावे थक्क, जिंनां चिर सतिगुर पूरा नज़र घर विच्च घर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शांती दस्से सति सरूप, जिस विच्च मिले हरि जू भूप, अन्ध अन्धेरा चुक्के चारे कूट, इक्को नज़री आए पुरख अकाल दीन दयाल जो हर घट रिहा समाईआ। (२० अस्सू २०२० बि)

साचे प्रभ एह कर्म कमाया। रिखीआं मुनीआं माण गवाया। घर भीलणी भोग लगाया। भख ताईं भोज बणाया। विच्च सरोवर प्रभ साचे भीलणी चरन छुहाया। साचा नीर साचा सर रघुपत उपजाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जुगो जुग तेरी अचरज वरते माया। (१ माघ २००८ बि)

भोजन भोग भोग भोग चार। कृष्न देवा अलख अभेवा गुर चरन सेवा, लिखाए लेख अपर अपार। लेहज फेहज भक्ख भोज गुणवन्ती गुण रिहा विचार। भगत भगवान भोजन करे वक्ख, चले अव्वलड़ी चाल विच संसार। चार कुण्ट आत्म दिस्से दुःख, नज़र ना आए नर निरँकार। गुर सेव चढ़ाए तिन्न फुल्ल कख, तन कराए शब्द अहार। पंचम फुल्ल पंजां तत्तां करे वक्ख, देवे जोती सदा अधार। प्रगट होए सति सरूपी हरि प्रतक्ख, नैण लोचण लोचण नैण सोलां कर तन शिंगार। गुरमुख साचे सन्त जन कदे ना सोइण, एका बीज साचा बोइण, नाम नरायण अलख अपार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे सन्त जनां भरया रक्खे सद भंडार। (१२ भादरों २०११ बि)

श्री भगवान इक्क अलाउँदा ए । भेव अभेदा आप खुल्लाउँदा ए । उजल आपणा राह

चलाउँदा ए। लेहज़ फ़ेहज़ वक्त मुकाउँदा ए। भख भोज डेरा ढाहुंदा ए। धुर दा अरदासा इक्को सोध, शुद्ध सभ नूं आप कराउँदा ए। विष्नूं वेख आपणा रिज़क रोज, रोजी तेरे हत्थ फड़ाउँदा ए। जो मेरे दर्शन नूं रहे लोच, तिन्नां दवारे तुहानूं ख़ाक रलाउँदा ए। एह उह दवारा सच्चा कोट, जो सचखण्ड नज़र किसे ना आउँदा ए। शब्द अगम्मी वज्जे चोट, पुरख अकाल आप लगाउँदा ए। एथे भंडारा पक्का बहुत, आदि जुगादि ना कोई मुकाउँदा ए। एह सतिजुग चले रौंस, रुसयां फेर नाल मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाउँदा ए।

साची सिख्या इक्क दृढ़ाई ए। प्रभ एका धार समझाई ए। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्ह़ाई ए। गुर अवतार ख़ुशी मनाई ए। पीर पैगम्बर रहे जस गाई ए। प्रभ दस्स उह वेला केहड़ा, जिस वेले बह के तेरा भोजन खाई ए। श्री भगवान कहे जिथ्थे मेरे भगतां डेरा, तिस थान मिले वड्डिआई ए। ओथे जा के बह के मंगो प्रभ देवणहार बथेरा, देंदयां तोट रहे ना राई ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक्क समझाई ए।

सुण के संगत बण गई पंगत, बह बह रहे खाईआ। नाले वेखण हरि दी संगत, ख़ुशीआं राग अलाईआ। सुण ज्ञान बोध अगाधे कोलों पंडत, जो धुर दी करे पढ़ाईआ। जिस खेल रचाया जेरज अंडज, उत्भुज सेतज दए वडयाईआ। अज्ज उस दवारिउँ आए मंगत, घर बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साची वस्त दे वरताईआ । (६ माघ २०२० बि)

श्री भगवान कहे मैं दयावान, दया विच्च समाईआ। रविदास दे टुक्कड़े सक्के कर परवान, लहज फहज भख भोज रूप वटाईआ। एहो जिहे किसे नहीं मिल्या पकवान, खा खा गई जगत लोकाईआ। जिस विच्चों तुहाढ़ु जोगा रक्ख लिआ दान, आपणे कोल छुपाईआ। कहारो जेहड़े तुहाढ़ु पैसे ठग्ग के गिआ बेईमान, मेरे सामुणे ठग्गी कमाईआ। रविदास नाल ना साबत रिहा ईमान, सिदक दित्ता तुड़ाईआ। एह लेखा कदी ना छड्डा विच्च जहान, जामन हो के पूर कराईआ। (२६ माघ २०२० बि)

भजन : हरिभजन हरि होए सहाई। हरिभजन हरि देवे वड्डिआई। हरिभजन गुरमुख दात प्रभ दर ते पाई। हरिभजन वड करामात, आत्म तृखा दे बुझाई। हरिभजन इक्क रखाए नात, आत्म जोती आप जगाई। हरिभजन गुरसिखां मिटाए अन्धेरी रात, दिवस रैण रहे रसना गाई। हरिभजन अन्तम पुच्छे गुरसिखां बात, वेले अन्त होए सहाई। हरिभजन अंदर वेख मार झात, सच वस्त तेरे घर टिकाई। हरिभजन मिटाए ज़ात पात, भरम भुलेखा रहे ना राई। हरिभजन देवे दात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दात आप रघुराई।

हरिभजन कल साचा योग। हरिभजन रस साचा भोग। हरिभजन गुरमुखां मेटे सर्ब वियोग। हरिभजन रसना जप मिटाए हउमे रोग। हरिभजन सोहँ शब्द चुगाए चोग। हरिभजन हरि देवे दरस अमोघ। हरिभजन हरि आप मिटाए चिन्ता सोग। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे धोग।

हरिभजन आत्म उजिआरी। हरिभजन देवे गिरधारी। हरिभजन गुरमुख साचे दुरमत उतारी। हरिभजन हरि देवे दात शब्द भण्डारी। हरिभगत साचा राज सच्ची सिकतारी। हरिभजन चरन लगाए सच्चा दरबारी। हरिचरन फिरन आए वड हँकारी। हरिचरन गुरसिख साचे आत्म धारी। हरिचरन आत्म जोत जगाए अगम्म अपारी। हरिभजन प्रगट होए आप निरँकारी। हरिचरन वेखे विगसे करे विचारी। हरिभजन काया कोट किला उसारी। हरिभजन सोहँ देवे सच अटारी। हरिभजन विच्च मात ना होए खवारी । हरिभजन साचे धाम आप बहाए बनवारी। हरिभजन एका रंग रंगे अपारी। हरिभजन गुरमुख खुल्ह़ाए दसम दवारी। हरिभजन एका जोत प्रभ इक्क उधारी। हरिभजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरमुखां नाम अपारी।

हरिभजन हरि का ध्यान। होए मेल भगत भगवान। हरिभजन चरन धूढ़ इशनान। हरिभजन आत्म सहिँसे सर्ब मिट जाण। हरिभजन एका शब्द उपजावे कान। हरिभजन साची धुन देवे महान। हरिभजन आत्म मारे साचा बाण। हरिभजन साचा देवे शब्द ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे साचा दान।

हरिभजन वड राजन राज। हरिभजन प्रभ सोहँ बंन्ह़ाए गुरसिखां सिर ताज। हरिभजन आप लगाए घर दसवें साची आवाज़। हरिभजन गुरसिख चढ़ाए साचे जहाज। हरिभजन शब्द सरूपी उडावे बाज। हरिभजन गुरसिख सवारे आपे काज। हरिभजन आप मिटाए जगत तृष्ना तृखा डांज। हरिभजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे चरन रखाए साची सांझ।

हरिभजन सच धन माल। रसना जप ना होए कंगाल। हरिभजन आत्म होए लालो लाल। हरिभजन साचा दीपक जोत जगे मिसाल । हरिभजन सच शब्द सुरत संभाल। हरिभजन भज्जण ना मानस जवानी डाल । हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे नाल।

हरिभजन हरि हरि दा वास। हरिभजन आप दवाए गुरसिखां स्वास स्वास। हरिभजन मात गरभ होए सहाई, आत्म रक्खे वास। हरिभजन माया ममता करे नास। हरिभजन शब्द उडारी आप लगाए मात पताल अकाश। हरिभजन गुरमुख कराए सच घर वास । हरिभजन गुरमुखां करे बन्द खलास। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन होए चरन दास।

हरिभजन शब्द घनघोर। हरिभजन हरि शब्द चुकाए मोर तोर। हरिभजन गुरसिख उडाए पतंग डोर। हरिभजन हरि दिवस रैण रखाए, साची अनहद साची धुन उपजाए, सुन मुन आप खुल्ह़ाए, पैंदी रहे सदा घनघोर। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बंन्ह़े पंजे चोर।

पंजे चोर वसण तन। हरिभजन ना लग्गण देवे आत्म संन्ह़। हरिभजन प्रभ अबिनाशी आप सुणाए कन्न। हरिभजन लग्गण देवे ना झूठा डंन। हरिभजन अन्तम बेड़ा देवे बंन्ह़। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां कराए धन्न धन्न।

हरिभजन शब्द इशारा। हरिभजन आप खुल्ह़ाए दसम दवारा। आप वखाए पार किनारा। आप कराए जोत अकारा। आप आपणा कीआ पसारा। सच शब्द सच्ची धुनकारा। अनहद

वज्जे पवण हुलारा। आवण गवण बूझ बुझारा। अमृत मेघ बरसे सवण, उलट कँवल चले फुहारा। गुरमुख आत्म होई बवल, प्रभ अबिनाशी पावे सारा। होए प्रकाश उप्पर धवल, पंचम जेठ कीआ अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान , गुरसिखां माण दवाए, साची भिच्छया झोली पाए, मंगया जिस दवार। (७ जेठ २०१० बि)
हरि का नाम सच्चा सज्जण, दो जहानां विछड़ ना जाइंदा। हरि का नाम हरि का भजन, सिमर सिमर सर्ब सुख पाइंदा। (२५ चेत २०२० बि)

भाण्डा : महाराज शेर सिँघ सच अवतार, भाण्डा भरम गवाया। (५ जेठ २००७ बि)

वेला अन्त अन्त संभाल। लुटया माल धन ना हो कंगाल। पंच चोर बैठे लाइण संनू, आपणा पल्ला आप संभाल। प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बंनू, जगत तृष्ना छड्ड जंजाल। काया भाण्डा प्रभ देवे भन्न, केहड़ी वस्तू तेरे चले नाल। कलिजुग जीव क्यों होया आत्म अन्ध, प्रभ अबिनाशी सद समाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां करे आपे प्रितपाल। (१ माघ २००६ बि)

भेड : एका भुल्लया साचा माही, कलिजुग जीव सुंञी भेड़ ना कोई संग रलावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखे खेल, बेमुखां विष्टा मुख चुगावे। (५ कत्तक २००६ बि)

भूत परेत : बुझी दीपक गुर आप जगाई। सच मंत्र गुर सच दृढ़ाई। ईशर जीव दा भेद मिटाई। अचरज नूं अचरज़ मिलाई। पसू परेतों कर देव बहाई। गुर पूरे विच्च एह वड्डिआई। शब्द आपणे दा भेद खुल्ह़ाई। सभ तों बाणी मुख रखवाई। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत सभ वस कराई। पूरे गुर विच्च एह वड्डिआई। त्रैलोक इस दा जस गाई। महाराज शेर सिँघ पैज रखवाई।
शब्द मेरा है निरबाण। जेतीआं मुशकलां तेतीआं आसान। नाम मेरा सभ में प्रधान। सोहँ शब्द सर्ब की आण। पवण रूप गुर मसाण बणाए। जम कंकर कोई नेड़ ना आए। बीर अठारां भय रखवाए। हाकन डाकन सभ डर जाए। सर्ब सृष्ट गुर बाण लगाए। विच्च भय सभ हरि गुण गाए। लोहे का संगल गल में पाए। सार की मूंगली सिर पर लाए। गुर पूरे कीती विचार। होए किरपाल प्रभ एकँकार। बचन से बाहर खाए सिर मार। गुर का दोखी ना उतरे पार।
इस शब्द दी एह वड्डिआई। गुर नानक दी कला वधाई। मरदाने उत्ते दया कमाई। भेडू वाली देह पलटाई। सोहँ शब्द हुण मुखों गाई। तीन लोक दा भय गवाई। प्रभ चरन संग लै मिलाई।
मेरा नाम जो नर घ्याई। सोहँ शब्द दा पाठ जो करे। इक्क हज़ार नित्त उठ पढ़े। दर्शन देवे आप प्रभ हरे। इक्क सौ इक्क पाठ जो करे। मन में शांत कपट ना धरे। ऐसी बुद्धि प्रभ है करे। धन्न धन्न मुखों करे नर हरे। देह दीपक विच्च जोत आ जले। पूरन पुरख होए सुजान। जिस नूं उपजिआ ब्रह्म ज्ञान । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। (८ फग्गण २००६ बि)

गुरसिखां नाल जो कहर कमाए। अंकड़ा घोड़ा लंकड़ा मसाण बण जाए। शदोण माई पौण दर धक्के खाए। किंगरे किंगरे गुर मरदंग वजाए। माई गौरजां सिर खेह पवाए। खाण पकाण घर की चाटी। गुर शब्द मधाण, गोरख नूं लाया बाण। महाराज शेर सिँघ भय रखाण, गुरसिखां दे नेड़ ना आण।

तप सप गुर शब्द बंधावे। भूत प्रेत कोई नेड़ ना आवे। दर वाट सभ भय रखावे। अमका काज़ी नष्ट हो जावे।बलीआ छलीआ मिसमरेज़मी इन्दर जाल दी माया पावे। ऐसा डंन दुष्ट को प्रभ लाए। जिंन ख़बीस सभ धक्क हटाए। नैण हीण खिच्च जोत गुआए। कुल ओस दी वधण ना पाए। जो सिख उप्पर चोट चलाए। महाराज शेर सिँघ होए सहाए। (१ विसाख २००७ बि)

शब्द विच्च प्रभ सर्ब बंधाए। अमका जीआ वस कराए। साचा बाण नाम लगाए। सर्ब मुशकलां हल्ल कराए। मसाण पवण प्रभ परे हटाए। जम का बेटा नेड़ ना आए। कालका माता दर विलकाए। बीर बैताल कोई रहण ना पाए। हाकन डाकन छाकन प्रभ पकड़ उठाए। अंचनी कंचनी निरंचनी कला सोधरी प्रभ बंधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए।

साचा गुर ओअंकार। गुरमुख साचे सुणे पुकार। मरू देवा करे खुआर। माल जोगी की असरई पार उतार। बीर मवकल करे खुआर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सरन पड़े दी पावे सार।

वलीए छलीए प्रभ मिटाए। हसन हसून अली सभ नष्ट कराए। आत्म जलीए रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द जणाए। दृष्ट मुशट कोई रहण ना पाए। छल छिदर आप गवाए। टूणा जादू कोई रहण ना पाए। सरदी काल बाल प्रभ आप हटाए। उलट वाहू दे सिर पवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। (६ जेठ २००६ बि)

सर्ब कला समरथ, दया कमाइंदा। हरि रक्खे दे कर हत्थ, जिंनां प्रेतां भूत दैतां शब्द डण्डा सीस लगाइंदा। हाकन डाकन सिर मुंडवाए, शब्द डोरी हरि बंधाए, गुरमुख साचे हरि भगत दुलारे, बेड़ा पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, धुरदरगाही सच मलाह, जगत तोड़े जंज़ाला फाह, जगत मार्ग साचे पाइंदा। (२२ मध्घर २०११ बि)

जुग चौथा कहर वरताए। जीव जंत बिललाए। कोई ना एहनूं पार लंघाए। कलिजुग अगन देह जलाए। होए निमाणे गुर दर ते आए। गुर सागर दया मेघ बणाए। सोहँ शब्द दी बरखा लाए। दुःख कलेश संगत दे लाहे। बीर अठारां सभ भय रखाए। जिन ख़बीस कोई नेड़ ना आए। मसाण पवण दर धक्के खाए। सोहँ शब्द जो सिख रसना गाए। भूत परेत कोई नेड़ ना आए। चकर सुदर्शन गुर एह चलाए। महाराज शेर सिँघ सिख दी पैज रखाए। (११ विसाख २००७ बि)

सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर लक्ख इक्क अस्सी हज़ार भूत बंनावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे अठारां बीर सीस निवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे अंचनी कंचनी पई शरमावे। सच्ची

एह दरगाह, जिथ्थे हाकन डाकन सिर मुन्नवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सरदी काल बाल करावे। सच्ची एह दरगाह, उलट वाहू केसे पवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सभ भय रखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर सिख तरावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ शब्द लिखवावे। (१६ विसाख २००७ बि)

गुर दरबार आए कर आसा। कोए ना जाए दर ते निरासा। ईशर जोत करे मात प्रकाशा। बैठा अडोल प्रभ पूरन अबिनाशा । सोहँ शब्द सुण सर्ब दुःख नासा। भूत परेत देह करे ना वासा। जे कोई वेखण आया दर तमाशा। बेमुख जन्म गवाए कर हासा । जो जन आया दरस प्यासा। तिस जन कउ बल बल जासा । शब्द सुण सर्ब दुःख नासा। जीव बिललाइन जिउँ बोटी बोट। चरन लाग तर जाण कोटी कोट। महाराज शेर सिँघ शब्द वजाई चोट।

रोग गवाए रोगीआं, रंग नाम चढ़ा के। देवे बैराग प्रभ जोगीआं, जो आए भरम गवा के। प्रभ वसे विच्च विजोगीआं, जो सरनी डिग्गे आ के। महाराज शेर सिँघ राखे पत, जीव गए रोग गवा के। दुखीआ जीव दर बिललाया। कर किरपा प्रभ पार कराया। नाड़ी बहत्तर प्रभ पवित्र कराया। तप सप भूप पलीत दर वाट अमका काजी प्रभ नास कराया। हाकन डाकन सिर मुंडवाया । शदौण पौण सर्ब हटाया। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत परेत विच्च शब्द बंनाया। गुर नानक पूरे साचा शब्द विच्च जगत सुणाया । ईशर टेक रख, रसन अलाया। कलिजुग महाराज शेर सिँघ पूरन परमेश्वर आया। (२५ चेत २००८ बि)

तीन लोक आप बणाए। सुरत चित मन लगाए। नाम निरबाण प्रभ बाण लगाए। जेतीआं मुशकलां तेतीआं असान कराए। साचा नाउँ प्रधान रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए।

मसाण मसाण पवण रूप। आप बंनाए प्रभ साचा भूप। जम का बेटा कालका माता आप परोए एका सूत। प्रभ माण गवाए वड वड अवधूत। एका शब्द आप उठाए, सोहँ सिर लगाए जूत। उहनी माता पतला बीर हँसता बीर बटका बीर। बटका बीर विनोदीआ बीर। सौ सन्तर विनोदिआ बीर। कालीआ बीर दुनियां बीर भौर। पताल बीर भैरों बीर। नरसिँघ बीर नाहर सिँघ बीर। हनवन्त बीर दया वन्त बीर। अहिमद बीर। मुहम्मद बीर। सलसला बीर सलाबीर। निरंदी नेसरी केसरी इजीआ बिज़ीआं बसोधरी कारवमी कमरवमी ललमी पलमी जगगनी जुगती भुगती इतनीआं भैणां जोर ना मिले मुकती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दर फिराए साचे दर दुरकाए जिस जन दया कमाए।

नाम जपाए प्रभ मिलण दी साची जुगती। आप धारे आप सवारे पार उतारे। पसू प्रेत जिस सगले बन्द पाए। लोहे का संगल पाइओ गले लटकाए। सार की मुगली सिर लगाए। सोहँ शब्द माण रखाए। सच सच सच रिहा लिखाए। कीआ जोत अकार आप निरँकार। बचन ते बाहर, खाए सिर मार। प्रभ साचा करे खुआर। सन्त का दोखी दुष्ट दुराचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग करे खुआर।

शब्द साचा जीओ पिण्ड काचा सो साचा काचा, जिस हिरदे वाचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच सच कल सच पछाता ।

हाकनी डाकनी छाकनी छार खुरी निरँकार बंधाए भण्डारी दृष्ट करे। मुशट करे, छल करे, छिदर करे, टूणा करे, जादू करे, काल के बाल करे, सोहँ साचा शब्द प्रभ सिर धरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द मात चलए किरपा आप करे।

राजा का तेज चोर का घोर रड़ा डूगर प्रभ साचा रच्छया आप करे। दीन दुनी दे पातशाह दर ते आए सीस झुकाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काज आप करे। (१५ सावण २००६ बि)

गुर पूरे तेरी वड्डिआईआ। दुःख रोग सर्ब मिटाईआ। पवण मसाण रहण ना पाईआ। दर साचे देण दुहाईआ। शब्द बाण हरि लगाईआ। गुरमुखां अचरज खेल कराईआ। भूत प्रेतां प्रभ साचे दे कढ्ढाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे शब्द विच्च वडयाईआ। शब्द तीर सच निशाना। रसना खिच्चे गुरसंगत तीर कमाना। ठहिर ना सके कोई पीर फकीर इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत बेताला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द देवे सुखाला सर्ब रखवाला।

सोहँ शब्द सिर रक्ख हत्थ। बीर बेतालया प्रभ पाए नथ। कर कर बेहालिआं विच्च शब्द जाए मथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर फेर चढ़ाए सोहँ साचे रथ। शब्द वज्जे आत्म तीर। आप चुकाए बध्धी धीर। नेत्र नेत्र नेत्र आप वहाए नीर। झूठी काया झूठा खेतर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुःख दर्द देवे हर अमृत पिलाए साचा सीर। (१४ जेठ २०१० बि)

वेखे हरि पवण मसाणा। इक्को मारे शब्द बाणा। जोत सरूपी साचा राणा। भूत प्रेतां वस कराना। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार शब्द डोरी नाल बंधाना। गुर नानक तेरा लिखया शब्द, कलिजुग जीआं हत्थ ना आना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रसना आपे गाणा।

गुर नानक एह शब्द अलाया। विच बंगाले एह सुणाया। मरदाना बणया भेड़ू, गुर पूरे आप छुडाया। सारे रोवण कढ्ढु कढ्ढु लकीरां, ना सके कोई छुडाया। एका इक्क निरँकार, करोड़ उनंजा एका शब्द बणाया। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश शब्द चलाया। उस दा फल एह रखवाया। त्रैलोकी नूं आप बंधाया । आपे बंनै मन चित सुरत लाया। नाम निरबाण तीर चलाया । जोतीआं मुशकलां तेतीआं असान कराया। मसाण पौणा का रूप, शब्द डोर नाल बंधाया। किंगर किंगर उतों ढाहिआ। नानक तेरा लिखया शब्द ना किसे मिटाया। जम का बेटा बंनै वखाया । कालका मात दए दुहाया। नानक चल के किधरों आया। शब्द फाह जिस ने पाया। लोहे दे संगल नाल बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, नानक तेरी रसना चल्लया तीर, प्रगट होए निहकलंक देवे फेर लिखवाया।

गुर नानक बद्धे सारे पीर। इक्क चलाए शब्द तीर। सभनां पाए आप वहीर। मरदाने

दित्ती इक्को धीर। सभ दे पड़दे देवे चीर। गुर नानक तेरी कौण मिटाए, चिट्टे उत्ते लग्गी काली लकीर। पैहले मदिरा मास तजाउँणा। दूजे रसना नाल गाउणा। तीजे नेत्र तीजे नैण दरस दिखाउणा। चौथे पौड़े साचे घर उप्पर चढ़ साचे धाम वास रखाउणा। पंचम पंचा राणी कलिजुग माया बेमुहाणी काया विच्चों बाहर कढाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा आपे मेल मिलाउणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर शब्द डोर नाल गुरमुख साचे आपे बंधाउणा। (१३ चेत २०११ बि)

हरि संगत साचा लेख लिखौणा, लिखणहारा आप लिखाइंदा। रोग सोग जगत मिटौणा, दर्द दुःख वंड वंडाइंदा। पवण मसाण नेड़ ना औणा, जिन भूत प्रेत ख़बीस ना कोई सताइंदा। शहीद दीद ना कोई मनौणा, चिराग़ आग ना कोई बलाइंदा। जोत जोत ना कोई जगौणा, देवी देव आप समझाइंदा। एका शब्द डण्डा हत्थ उठौणा, कूड़ी क्रिया वेख वखाइंदा। शब्द सुहागी छन्दा एका गौणा, एका राग अलाइंदा। सिर बांह सरहाणे दे दे सौणा, भय भयानक ना कोई जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत तेरा दुःख, आपणी झोली आपे पाइंदा। (१ भादरों २०१६ बि)

देवे नाम सच्चा धन माल, आदि अन्त जुगा जुगन्त करे बन्द ख़लाश। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार, भूत पेंतां करे शब्दी मार। नाम खण्डा तेज़ कटार, हाकण डाकण करे खुआर। अंचणी कंचणी कला सोदरी रोवे ज़ारो ज़ार, कालखी कुलक्खणी सलमी पलमी करे गिरया ज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात करे खुआर।
बीर अठारां देवे बंनू। बविंजा बविंजा कहे धन्न धन्न। मुल्लां शेख़ मसाइक पीर दस्तगीर दोए फड़ण कन्न। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका देवे डंन,। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरमुख कहणा जाए मन्न। (२१ भादरों २०१८ बि)

टूणा जादू ना सके पोह, जिस जन सतिगुर दया कमाईआ। काग़ज़ कलम शाही लिखण वाले सारे रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अंदर बाहर दुरमत मैल देवे धो, गुर पूरे हत्थ वडयाईआ। जो जन जपे जाप सोहँ सो, तिस घर टूणा जादू चले ना कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।
जिंन ख़बीश भूत प्रेत हाकन डाकन सिर मुंडवाइंदा। ना घर ना बाहर खेत, पशू पंछी बंधन पाइंदा। जो जन हरिसंगत हरि करे हेत, तिस गृह कोई ना फेरा पाइंदा। सदा रुत्त रहे बसन्ती चेत, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। बाकी कुछ थोड़ा जिहा रक्खे भेत, आपणा लेखा आपणे हत्थ वखाइंदा। (१३ माघ २०१८ बि)

भूत प्रेत ना रहे जिन खवीस, हाकण डाकण सिर मुंडवाइंदा। शब्दी शब्द सुणाए सच हदीस, हज़रत आपणा नाउँ पढ़ाइंदा। पृथ्मी अकाश वेखणहारा बीसन बीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा।
भूत प्रेत दस्से राह, फड़ बांहों आप उठाईआ। सतिगुर पूरा मिले मलाह, लेखा सभ दा

दए चुकाईआ। मेरा जामा दए बदला, बदली करे थाउँ थाईंआ। गुरसिख सतिगुर अग्गे इक्क अरदासा दए करा, मेरी कटे पिछली फाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा दोहां दए मुकाईआ । (२८ हाढ़ २०१६ बि)

जल तरंग उपजे तरंग, जल ही विच्च समाईआ। तरंग अन्तम होवे भंग, गुरमुख भंग रूप ना कदे वखाईआ। एथे ओथे सदा रहे अनन्द, अनन्द मंगल इक्को गाईआ। पुरख अकाल दा सच्चा चन्द, गुरमुख इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कोटन कोट तरंग, सन्तां दे चरनां हेठां रखाईआ।
तरंग तरंग दी देवे कोई की मिसाल तरंग, मातलोक खेल कराइंदा । गुरमुखां चढ़े अगम्मी रंग, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा। गुरमुख आवे जावे निशंग, एथे ओथे इक्को घर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पूरी करे उमंग, आपणी उमंग भगतां अग्गे रखाइंदा।
काल दयाल प्रभ की माया, अचरज खेल आप कराईआ। जप तप हठ, सति संजम नेम बणाया, जोग अभिआस नाल रलाईआ । टूणा जादू मड़ी मसाण भूत प्रेत जिन ख़बीस राह चलाया, हुक्मे हुक्म सर्ब भवाईआ। सभ दे उत्ते आपणा मंत्र नाम रखाया, पृथ्मी आकाश आपणे हुक्म चलाईआ। बीर बेताल बंनू वखाया, हाकन डाकन सिर मुंडवाईआ। अंचनी कंचनी हुक्म जणाया, सकती भुगती भुल्ल कदे ना जाईआ। इक्को डण्डा सन्तां हत्थ फड़ाया, सभ दी करन सफ़ाईआ। (१३ मध्घर २०१६ बि)

चिठ्ठी कहे सुनेहड़ा कबीर, कबरां विच्चों बाहर सुणाईआ। उह मालक आया जिस दा तन ना कोई सरीर, तत्त नज़र कोई ना आईआ । दाता हो के गुणी गहीर, गहर गवर खेल खिलाईआ। जेहदा नूर जहूर लातस्वीर, तसबीआं वाला कोई समझ ना सके राईआ। करनीआं कर के मशहूर, करता वड वडयाईआ। जिस ने मेरा पन्ध मुकाया दूर, नेरन नेरा हो के वेख वखाईआ। सभ तों अख़ीरी लिखया अबिनाशी करता जन भगत दवारे बणे मज़दूर, मज़दूरी गुरमुखां आप कमाईआ। निहकलंक नरायण नर आवे ज़रूर, ज़रूरत सभ दी वेख वखाईआ। ओस वेले भगत होए मशकूर, जिस वेले मुसीबत विच्चों बाहर कढ़ाईआ। बेशक दुःख दलिद्दर दर्द प्रभ दे दर ते सारे रोवण ज़रूर, धाईं मारन वाहो दाहीआ। प्रभू साडी किरपा नाल हँकारीआं तुटदा ग़रूर, माण अभिमान देण तजाईआ। दुख कारन तेरा नाम लैण ज़रूर, सुख विच्च सारे जाण भुलाईआ। असीं तेरे बरदे बण के मज़दूर, तेरयां भगतां रहे उठाईआ। भूत प्रेत बताले बण के रहे घूर, जिन ख़बीस हो के भज्जीए वाहो दाहीआ । उह वी साडे शुकरीए दा करन मशकूर, जिन्नां दे विचोले हो के रहे मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी तेरा दस्तूर, एथे ओथे दो जहान पुरी लोअ बहिमंड खण्ड आकाश पाताल, ज़िमी आसमान दीन दयाल काल महांकाल कोई मेट ना सके राईआ। (८ मध्घर २०२१ बि)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
(पंज पाठ रोज़)
बांधो सुरत शब्द मन चित धार। त्रैलोआं बांधो गुरचरन कँवल प्यार। एका पढ़या नाम निरबान। जेतीआं मुशकलां तेतीआं आसान। बीर अठारां मारे बान, हाकन डाकन सिर मुंडान। अंचनी कंचनी निरंचनी कलासोदर शक्त भुगत सर्ब प्रछुतान। अकास पृथ्मी भूत प्रेत पसू चकर इक्क लख असी हज़ार वेखे मार ध्यान । निरगुण नाम करे अकार, आगिआ करे आप भगवान। हाकन डाकनी छाकनी छार खुरी बंधन पाए अठ्ठ पैहन निगाहबान। गुर मुख आखर इक्क वखाए, चिता रोग सोग दुःख मिट जान। (पूरन सिँघ)
(हर प्रकार दा दुःख भूत प्रेत टूना जादू गुरसिख दी रसना विच्चों निकलन नाल दूर हो जावेगा।)

भंग : नाम जोती पीइए भंग, भंगढ़ा वेखे लोकाईआ। जिस दा चढ़े अनोखा रंग, रंग नज़र किसे ना आईआ। नच्चीए टप्पीए बण मलंघ, खुशीआं ताल वजाईआ। जगत दवारिउँ अग्गे लंघ, घर आपणा वेख वखाईआ। जिस गृह खेल सूरा सर्बंग, निरगुण करता रिहा कराईआ। दिवस रैण इक्क अनन्द, अनन्द आत्म विच्चों प्रगटाईआ। कर प्रकाश नुरानी चन्द, जोती दीप डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भंग इक्को इक्क समझाईआ।
साची भंग नाम खुमारी, बिन रगड़िउँ रगढ़ा दए लगाईआ। आत्म परमात्म टुट्टी गंढ यारी, यारां इक्को घर वखाईआ। महल्ल अट्टल सोहे तन मनारी, बंक वज्जे इक्क शनवाईआ। नज़री आए निरगुण निरँकारी, निराकार सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस इक्को भंग पिआईआ।
पीओ भंग लाओ रगढ़ा, डण्डा कुण्डा नज़र कोई ना आईआ। जिस पीतिआं आवण जावण मुक्के झगड़ा, नाता छुटे जगत लोकाईआ। राए धर्म ना लए बदला, अग्गे देवे ना कोई सज़ाईआ। गुरमुख चढ़े आपणी मंज़ला, सन्त घर वेखण चाईं चाईंआ। जिस घर होवे इक्को अदला, इन्साफ़ आपणा आप समझाईआ। पी भंग ना होवे पगला, पागलपन परे हटाईआ। घर सुणे चार मंगला, गीत सुहागी ढोला गाईआ। फेर जे लेखा पुछो अगला, अग्गे चंगी तरा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भंग इक्को इक्क समझाईआ।
पीओ भंग चढ़े मसती, मसत दीवाना रूप वटाईआ। जिस पीतिआं नज़री आए इक्को हसती, हस्त कीट रूप ना कोई वखाईआ। काया मन्दर सोहे बस्ती, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भंग इक्क प्याईआ।
पीओ भंग फड़ प्याला, साचा कासा इक्क समझाईआ। जिस विच्च वस्सया दीन दयाला, निरगुण आपणा आसण लाईआ। जिस पीतिआं नाता तुटे काल महांकाला, जगत जंजाला तोड़ तुड़ाईआ। ओस भंग दा देवां हवाला, जेहड़ी भंग पोसत डोडिआं विच्च कदे ना आईआ। जिस दे पीवण दा राह सुखाला, सतिगुर पूरा दए समझाईआ। पिछला कोई कहण दा नहीं हवाला, हालत वेंहदिआं दए बदलाईआ। की करे विचारी बिहंगम चाला, जिनां आपणी गोद बहाईआ। सो गुरमुख गुरसिख भगत भगवान सचखण्ड बैठण सच्ची धर्मसाला, अग्गे

पन्ध नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मसती मसत अलमसत आपणे नाम चढ़ाईआ।

भंग कहे मैं बड़ी चलाक, आपणे विच्च रक्खां वडयाईआ। साधां सन्तां विच्च रलाया ख़ाक, मूंह दे भार सुटाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना खोल्हे तेरा ताक, ताड़ी तेरे नाल ना कोई लगाईआ। सभ नूं लग्गी झूठी चाट, रसना जिह्वा सवाद बणाईआ। जो आए प्रभू तेरे घाट, तिन्नां लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा रस, रस इक्को इक्क समझाईआ।

भंग कहे मेरा वेखो घोटा, रगढ़ा रगढ़े नाल बंधाईआ। जेहड़ा मैनूं पी के होया मोटा, रातीं सुत्यां सुरत भुलाईआ। सचखण्ड दवारिउँ कीता खोटा, कीमत अग्गे ना कोई रखवाईआ। की होया जे काया भरया लोटा, अन्तर मूंह दे भार रुड़ाईआ। जिन्नां चिर अंदर जगे ना निर्मल जोता, सच सरूप ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भंग खुमारी इक्को इक्क वखाईआ।

इक भंग बिन कूंडे डण्डे, आपणा रस वखाईआ। इक्क भंग जन भगतां नाल हंढे, साचा संग निभाईआ। इक्क भंग प्रभ नालों टुट्टी गंढे, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। इक्क भंग जगत साध कीते मारन खण्डे, टक्करां साहनां वांग लगाईआ। इक्क भंग प्रेम प्रीती घर घर वंडे, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। इक्क भंग मूरखां चुक्की फिरदे कंधे, जिउँ भावे तिउँ रही भवाईआ। ओस भंग ते प्रभू कदी ना मन्ने, जो भंग टकयां नाल मंगाईआ। गुरमुख सज्जण उह चंगे, जो पी नाम भंग अठ्ठे पहर ताड़ी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, रस आपणा नाम वखाईआ। (२७ पोह २०२० बि)

भिन्नी रैन : भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, पारब्रह्म प्रभ जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, तीन लोक जोत जगाई । भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रगट भए सर्ब सुखदाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जगत आए आप रघुराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गुर पूरे घर जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जै जै जैकार मातलोक कराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ जस गाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जोत निरञ्जण प्रभ जगत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गण गंधरब फूलन वरखा लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, करोड़ तेतीस रहे लिव लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, इन्दर इन्दरासण बैठे वरखा लाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, ब्रह्मा विष्न महेश निगाह मात टिकाई । भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, चन्द सूरज दोवें बैठे मुख छुपाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, गुर ठांडा ठंड जोत समाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रगट भए प्रभ सुखदाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, हो मेहरवान एह जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, त्रेता राम जगत गोसाईं। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, काहन घनईआ जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कृष्न मुरार एह बणत बणाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कलिजुग होया घोर रहे जीव बिललाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, पापां पाया जोर सच सुच्च नष्ट हो जाई।

भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, धरत करे पुकार पापां तों दे छुडाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, करके खेल अपार प्रभ ने जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कोई ना जाणे सार एह बिंग कसाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जोत तों प्रगट जोत जोत जगत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, बिआपे सभे दुःख कलिजुग लए तराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, विष्नूं प्रगट आप मानस देह बणाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जेठ पंज घर घर मिले वधाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, किरपा कर अपार ईशर कलिजुग दे वड्डिआई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, धन्न सुहावा थान जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कुक्ख ताबो दी सुफल कराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, पिता जवंद सिँघ पूत रघुराई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ जोत जगत टिकाई।

भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, मिल सखीआं मंगल गाया धन्न जणेंदी माई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जगत भए उजिआर भगत हरि जस गाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जामा लिआ धार कल निहकलंक अखवाई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ लै अवतार तीन लोक जै जै जैकार कराई।

भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, अज्ज सुहावी रात प्रभ जोत जगाई । भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, बिक्रमी उनीं सौ पंजाह लिखवाई । भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, जेठ पंजवीं आई। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, मंगलवार थित लिखाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, घनकपुरी नूं भाग लगाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, चन्द सूरज खड़े दर सीस झुकाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कलिजुग हो निहकलंक आए। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ बालक देह जोत जगाए।

भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, देह सच सुच्च दीपक परगासिआ । भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, विच्च देह ईशर निवासिआ। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, प्रगटी जोत अपार होवे जगत धरवासिआ। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, सच्चा होवे दरबार सच गुर परगासिआ। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, अज्ज सुहावी रात देवे दान अपार जाए ना कोए निरासिआ। कलिजुग देवे तार जिन आहार शराब ना मासिआ। गरुसिख विच्च संसार जिउँ कंचन परगासिआ। महाराज शेर सिँघ आप निरँकार, भगतन दासिआ।
(४ जेठ २००७ बि)

* * * * *
* * * * *
* * * * *
* * * * *
* * * * *